



स्थापना : 1918

वर्ष : 87, अंक : 5

मई 2023



सभा के संस्थापक : महाता गांधी

वार्षिक चंदा : ₹ 100/-
एक प्रति का मूल्य : ₹ 8/-



उत्तर
राजिव
समिति

दक्षिण भारत हिन्दी प्रचार सभा, मद्रास
शिक्षा परिषद की बैठक : 16 अप्रैल, 2023 : चित्र दीर्घा



हिन्दी प्रचार सभाचार

(राष्ट्रीय महत्व की संस्था, दक्षिण भारत हिन्दी प्रचार सभा का मुख्य पत्र)

दक्षिण भारत हिन्दी प्रचार सभा, मद्रास

(संसदीय अधिनियम 14 सन् 1964 द्वारा घोषित राष्ट्रीय महत्व की संस्था)

वर्ष : 87 अंक : 5

मई 2023



संपादक

जी. सेल्वराजन

सह संपादक

डॉ. जी. नीरजा

neerajagurramkonda@gmail.com

प्रमाणित प्रचारक चंदा

₹ : 100/-

संपादकीय कार्यालय

दक्षिण भारत हिन्दी प्रचार सभा, मद्रास

टी. नगर, चेन्नै - 600 017

संपर्क सूत्र : 044 - 24341824

044 - 24348640

Website : dbhpscentral.org

You Tube Channel :

DBHPS, Central Sabha Chennai

Email : dbhpssahithyach17@gmail.com

संपादकीय

- ◆ अंबा प्रसाद सुमन का हिन्दी चिंतन 4

विरासत

- ◆ सुमित्रानन्दन पंत महादेवी वर्मा 31

आलेख

- ◆ विश्व गुरु रवींद्र डॉ. एम. लोकनाथन 11
- ◆ विश्वबंधुत्व का संदेश डॉ. राजलक्ष्मी कृष्णन 16
- ◆ दक्षिण में हिन्दी की स्थिति डॉ. वासुदेवन शेष 23

कविता

- ◆ मजदूर प्रो. देवराज 15
- ◆ जीवन अनिल कुमार झा 17
- ◆ विस्थापन का दर्द ईश्वर करुण 22

मीडिया

- ◆ तमिलनाडु की हिन्दी पत्रकारिता डॉ. सी. जयशंकर बाबू 7

लघुकथा

- ◆ पथ्थ और परहेज डॉ. दिलीप धींग 27
- ◆ सुशीला बी. जयलक्ष्मी 28

भाषा शिक्षण

- ◆ गीतों के माध्यम से हिन्दी शिक्षण डॉ. गुर्जमकोंडा नीरजा 29

पुस्तक समीक्षा

- ◆ हिन्दी को समृद्ध करती... बी. एल. अच्छा 12

अनुसृजन

- ◆ वंडर बलून अलमेलु कृष्णन 18

परीक्षोपयोगी

- ◆ अनुवाद अभ्यास 21
- ◆ पाठ्य पुस्तक-सूची 36

पाठकीय

- बूझो तो जानो 27

बूझो तो जानो

पत्रिका में प्रकाशित रचनाओं में व्यक्त विचारों का पूर्ण उत्तरदायित्व लेखक पर होगा।

संपादकीय ...

अंबा प्रसाद सुमन का हिंदी चिंतन

प्रसिद्ध भाषाविद् अंबा प्रसाद सुमन (1916) के पूर्वज हिसार से आकर अलीगढ़ जिले के शेखुपुर गाँव में बसे थे। उनके पितामह पं. राघवल्लभ गौड़ आयुर्वेद के ज्ञाता थे। पूरा गाँव उन्हें 'वैद्य जी' कहकर संबोधित करता था। वे गाँव में पंडिताई भी करते थे। उनके पिता पं. श्यामसुंदर लाल गौड़ ने अंबाला में आयुर्वेद की पढ़ाई की थी। वे वैद्य थे। वे कभी-कभी भागवत् और वाल्मीकि रामायण की कथाएँ भी बाँचते थे। उन्होंने संस्कृत की प्रथमा परीक्षा उत्तीर्ण की थी। 'अमरकोश' और 'लघुसिद्धांत-कौमुदी' उन्हें कंठस्थ थे। वे वार्तालाप में दूसरे व्यक्ति को प्रायः 'भगवन्' संबोधित करते थे। सुमन जी बचपन से ही भागवत, रामायण, महाभारत की कथाएँ सुनते-कंठस्थ करते बड़े हुए। उनकी दादी उन्हें प्यार से 'अंबरिया' कहा करती थी।

ब्रजभाषा का संस्कार और स्वाभिमान उन्हें विरासत में प्राप्त हुए। इस संबंध में अंबा प्रसाद सुमन कहते हैं, 'स्पष्टवादिता मेरे जीवन की 'विधि' और चाटुकारिता मेरे जीवन का 'निषेध' रही है। (अंबा प्रसाद सुमन, मैं और मेरा भाषा-चिंतन, पृ.83)। वे अपने ब्रजभाषा के प्रति प्रेम के संबंध के बारे में कहते हैं कि 'तुलसी कृत 'रामचरितमानस' के प्रति श्रद्धा और ब्रजभाषा के प्रति प्रगाढ़ प्रेम मेरे हृदय में मेरी दादी ने ही पैदा किया था। मेरी दादी ठेठ ग्रामीण ब्रजभाषा में मुझे तुलसी कृत 'रामचरितमानस' की कथाएँ रात को सुनाया करती थी। मेरा ब्रजभाषा-प्रेम बाल्यकाल से शानैः शानैः बढ़ता चला गया और मेरी 40 वर्ष की अवस्था में वह पीएचडी (ब्रजभाषा शब्दावली) के शोधकार्य के रूप में प्रकट हुआ।' (वही, पृ. 14)

14 वर्ष की अवस्था में अंबा प्रसाद सुमन मिडिल कक्षा में थे। इस संबंध में उनका कथन है कि 'उन दिनों सातवीं कक्षा में मिडिल हुआ करती थी। अंग्रेजों के द्वारा स्थापित शिक्षा-प्रणाली के अंतर्गत हिंदी-उर्दू मिडिल शिक्षा परीक्षा 'वर्नाक्युलर मिडिल परीक्षा' कहलाती थी। 'वर्नाक्युलर' शब्द का अर्थ है 'घटिया देशी बोली'। इस शब्द का अर्थ 'गाली' भी है। दूसरा एक अर्थ है 'असभ्यों और गुलामों की बोली'। (वही, पृ. 10)। हिंदी भाषा को ग्रियर्सन और काल्डवेल ने वर्नाक्युलर कहा था। उन दोनों ने हिंदी साहित्य के इतिहास पर जो प्रकाश डाला, उसे ही आज भी प्रामाणिक माना जाता है। इसीलिए सुमन जी कहते हैं कि हम आज भी मानसिक दृष्टि से अंग्रेजों और अंग्रेजी के गुलाम हैं। (वही)

अंबा प्रसाद सुमन 1960 से लेकर 1975 तक भारत सरकार के केंद्रीय हिंदी निदेशालय और वैज्ञानिक एवं तकनीकी शब्दावली आयोग की पारिभाषिक शब्दावली परियोजना में भाषा विशेषज्ञ के रूप में काम किया था। उस समय उन्होंने राहुल सांकृत्यायन के सिद्धांतों पर काम किया। इस संबंध में उनका यह कथन उल्लेखनीय है। डॉ. रघुवीर की हिंदी-पारिभाषिक शब्दावली को भारत सरकार ने बहुत कठिन और दुर्बोध माना है। सुगम तथा बोधगम्य शब्दावली-निर्माण के लिए सरकार ने नई समिति बनाई थी। उस नई समिति ने जो सिद्धांत निर्धारित किए थे, वे लगभग वे ही थे, जो राहुल सांकृत्यायन जी ने बनाए थे। राहुल जी का मत था कि कोई भी शब्द चाहे वह अहिंदी प्रांत का हो, अंग्रेजी का हो, या अन्य विदेशी भाषा का हो, यदि वह बहुप्रचलित है और यथार्थ परिभाषा दे सकता है, तो उसे हिंदी में ले लेना चाहिए। राहुल जी के इन्हीं सिद्धांतों पर ही हम हिंदी-शब्द बनाते थे।' (वही, पृ.36)।

अंबा प्रसाद सुमन भाषा की वर्तनी के प्रति सजग रहते थे। उन्हें इस बात की चिंता सालती थी कि हिंदी साहित्य में कुछ शब्द गलत वर्तनी के साथ प्रचलित हो गए हैं और नए-नए लेखक उन्हीं रूपों को सही मानकर प्रयोग करने लगे हैं। ऐसे अशुद्ध शब्दों का प्रयोग तब और अधिक प्रचलित हो जाता है, जब किसी प्रसिद्ध साहित्यकार की पुस्तकों में उन शब्दों को नए लेखक देख लेते हैं। 'भाषा विज्ञान के क्षेत्र में बहुत से अधीती या शोधार्थी ऐसे हैं, जो 'भाषा' को शुद्ध भाषा के रूप में अलग इकाई मानकर अपना अध्ययन प्रस्तुत कर रहे हैं। यह पद्धति पश्चिम की देन है। भाषा का वह गणित साहित्य का कुछ भला नहीं कर रहा है। मैं उस प्रकार के गणितीय समीकरण का पक्षधर नहीं हूँ। भाषा-विवेचन को साहित्य की परतें खोलनी चाहिए।' (वही, पृ. 7)। इस बात को अंबा प्रसाद सुमन कुछ उदाहरण देकर स्पष्ट करते हैं। 1938 में इंटर पढ़ते समय उन्होंने काशी हिंदू विश्वविद्यालय के हिंदी विभागाध्यक्ष बाबू श्यामसुंदर दास से जब पूछा कि 'जगा हुआ' के अर्थ में संस्कृत शब्द 'जाग्रत्' ठीक है या 'जागृत्' तो उत्तर में श्यामसुंदर दास ने लिखा था 'जागृत्' ठीक है। अंबा प्रसाद सुमन अपना तर्क प्रस्तुत करते हुए कहते हैं कि 'वास्तव में संस्कृत में 'जगा हुआ' के अर्थ में शुद्ध शब्द है 'जागरित्' और 'जागता हुआ' के अर्थ में शुद्ध शब्द है 'जाग्रत्'। 'जागरित्' में 'क्त' प्रत्यय और 'जाग्रत्' में 'शत्' प्रत्यय है। 'जागरण' के अर्थ में किसी ने भाववाचक संज्ञा शब्द अज्ञान के कारण 'जागृति' लिख दिया होगा। वह प्रसिद्ध लेखक भी रहा होगा। अतः नए लेखक उसे देखकर 'जागृति' लिखते रहे होंगे। आज यह 'जागृति' इतना अधिक प्रचार पा गया है कि यदि मैं इसे गलत कहकर 'जागरिति' को शुद्ध बताऊँ, तो मेरी बात पर कोई हिंदी-लेखक सहसा विश्वास न करेगा और मुझे ही गलत बताएगा।' (वही, पृ. 37)। इसी प्रकार 'सर्जन' के स्थान पर 'सृजन' का प्रयोग। 'साहित्य की मुक्ति या कछुआ धर्म?' लेख में नामवर सिंह ने 'सर्जन' के लिए संज्ञा रूप में 'सृजन' का प्रयोग किया है और विशेषण रूप में 'सर्जनात्मक' का। इस संबंध में अंबा प्रसाद सुमन का कहना है कि 'कमाल यह है कि 'सृजन' में 'आत्मक' के योग से नामवर जी 'सर्जनात्मक' शब्द बनाते हैं। यदि उनकी दृष्टि में 'सृजन' हिंदी में सही है, तो विशेषण 'सृजनात्मक' बनाना चाहिए था।' (वही, पृ. 40)। इसी प्रकार 'द्रष्टव्य' के स्थान पर 'दृष्टव्य', 'गद्गद' के स्थान पर 'गद्गद्', 'अंतरराष्ट्रीय' के स्थान पर 'अंतर्राष्ट्रीय', 'भागवत् कृपा' के स्थान पर 'भगवद् कृपा' आदि। कहने का आशय यह है कि हिंदी के लेखकों ने हिंदी को ऐसी भाषा बना दिया है, जिसमें कुछ भी लिख दीजिए, सब ठीक है। हिंदी के ऐसे अनेक शब्द शुद्ध-अशुद्ध के झूले पर झूल रहे हैं।

अंबा प्रसाद सुमन की मान्यता है कि वास्तव में साहित्यिक भाषा का विकास मूलतः जनबोली से होता है और सच्चा साहित्यकार वही है, जो शब्द में अंतर्भूत अर्थ को अच्छी तरह देख लेता है और उपयुक्त अवसर पर उसका उपयुक्त प्रयोग करता है। लेखक का भाव या विचार भाषा में उत्तरने से पहले शब्द से जूझता है। उस जूझने में जो सफल है, वही सफल लेखक है। भावाभिव्यक्ति के समय लेखक के मानस पटल पर एक साथ कई पर्यायवाची शब्द आते हैं। उस समय उसके समक्ष एक भीषण तथा विषम परिस्थिति आ जाती है। उस समय लेखक का अध्ययन तथा लेखक की मेधा उन पर्याय शब्दों की सूक्ष्म भेदक रेखाओं का अवलोकन गहराई से करती है। यदि उस समय उसकी मेधा सफल हो गई अर्थात् यदि उसने अपनी अभिव्यक्ति के लिए उपयुक्त शब्द पकड़ लिया, तो वह लेखक सच्चे अर्थों में सफल हो गया; अन्यथा कलम घिसने वाले लेखक तो सहस्रों हैं। (वही, पृ. 5)।

अंबा प्रसाद सुमन ने साहित्य-सर्जना की दृष्टि से अपनी यात्रा कविताओं से प्रारंभ की थी। उन्होंने 1941-1942 के बीच राष्ट्रीय चेतना से संबद्ध कविताओं का सर्जन किया था। उन्होंने स्वयं इस बात की पुष्टि की है कि उनकी राष्ट्रीय कविताओं को प्रेरणा महात्मा गांधी द्वारा चलाए गए आंदोलन से प्राप्त हुई थी। (वही, पृ. 63)। वे साहित्य को नाचते हुए मोर के समान मानते हैं 'जिसके भाव-पद भूमि पर और कला-पक्ष आकाशोन्मुखी होते हैं।' (वही, पृ.6)। उनकी मान्यता है कि साहित्य के सार की प्राप्ति का साधन शब्द का अध्ययन है। 'शब्द का अध्ययन उसके अर्थ का अध्ययन है। अर्थ का अध्ययन ही साहित्य-मर्म-बोध रूपी फल है। उस फल का रस ही साहित्य का आनंद है।' (वही)

यह हमारे लिए अत्यंत गर्व की बात है कि अंबा प्रसाद सुमन दक्षिण भारत हिंदी प्रचार सभा, मद्रास के विश्वविद्यालय विभाग के प्रथम आचार्य एवं अध्यक्ष थे। 1964 में दक्षिण भारत हिंदी प्रचार सभा, मद्रास ने एमए (हिंदी) तथा शोध के लिए उच्च शिक्षा और शोध संस्थान की स्थापना की थी। 'कुलपति श्री अय्यंगार और कुलाधिपति श्री लाल बहादुर शास्त्री, तत्कालीन प्रधान मंत्री, भारत सरकार (पदेन) थे।' (वही, पृ. 105)। विभागाध्यक्ष का दायित्व अंबा प्रसाद सुमन को सौंपा गया था। 1964 से 1966 तक अर्थात् दो वर्ष उन्होंने विभागाध्यक्ष के रूप में महती भूमिका निभाई। उन्होंने अपने अध्यापन के आधार पर दक्षिण भारत के छात्रों की समस्याओं पर भी प्रकाश डाला है। जब एमए हिंदी की कक्षा में उन्होंने एक छात्र से 'चिंतामणि' के एक पाठ का प्रथम अनुच्छेद पढ़ाया तो उस छात्र ने 'हैं' को 'हैम्' तथा 'संपत्ति' को 'सम्पत्ति' पढ़ा। इस बात पर सुमन जी कहते हैं कि दोष विद्यार्थी का नहीं है, अपितु दोष देवनागरी लिपि के मुद्रण का है। उत्तर भारत के छात्र के लिए हिंदी मातृभाषा है और वह समाज से भी उच्चारण सीखता है। अतः उसे कठिनाई नहीं होती। लेकिन दक्षिण भारत के छात्र व्याकरण तथा ध्वनिशास्त्र के आधार पर हिंदी सीखते हैं। वे कहते हैं कि 'जब हिंदी में छपा हुआ 'संपत्ति' शब्द 'सम्पत्ति' उच्चारित होता है, तब 'हैं' का उच्चारण 'हैम्' क्यों न होगा।' (वही, पृ.107)। जब श्यामपट पर उन्होंने 'हूँ' लिखा तो छात्र ने उसका सही उच्चारण किया। लेकن जब 'हूँ' लिखा तो 'हूम् पढ़ा' 'हंस' लिखा तो 'हम्स' पढ़ा। अतः अंबा प्रसाद सुमन हिंदी-जगत के विद्वानों से आग्रह करते हैं कि 'यदि वे हिंदी को संपूर्ण भारत में व्यापक बनाना चाहते हैं, तो हिंदी की पुस्तकें सही तथा वैज्ञानिक देवनागरी लिपि में पूरी सावधानी के साथ मुद्रित की जानी चाहिए। उत्तर भारत के कुछ हिंदी लेखक तथा प्रेस जो 'हूँ' और 'हैं' लिखते हैं उन्हें दक्षिण के छात्र 'हूम्' और 'हैम्' ही पढ़ेंगे। हाँ, हूँ और हैं को वे वैसा ही पढ़ेंगे जैसा पढ़ा जाना चाहिए। हिंदी की देवनागरी लिपि में अनुस्वार और अनुनासिकता को स्पष्टतः अलग-अलग लिखा जाना चाहिए।' (वही)

अंबा प्रसाद सुमन राष्ट्र के साहित्यकारों तथा राष्ट्रभाषा सेवियों से नम्र निवेदन करते हैं कि वे अपनी लेखनी को देखें, राष्ट्र को देखें और राष्ट्रभाषा को देखें। वे बार-बार कहते हैं -

मेरे श्रद्धेय साहित्य सेवियो! / राष्ट्र को बचाइए / राष्ट्रभाषा को उठाइए/ यही मेरी अंतिम कामना है/ यही मेरी प्रार्थना है। (वही, पृ. 438)

(सह संपादक)

तमिलनाडु की हिंदी पत्रकारिता

(नब्बे दशक के उत्तरार्द्ध का परिवृश्य)

- डॉ. सी. जयशंकर बाबू

स्वतंत्र्योत्तर युग में तमिलनाडु की हिंदी पत्रकारिता के अनेक आयाम विकसित हुए। इस विकास का साक्षी के रूप में नब्बे दशक की हिंदी पत्रकारिता को मान सकते हैं। विगत सदी के नब्बे दशक के उत्तरार्द्ध में तमिलनाडु से प्रकाशित कुछ प्रमुख पत्र-पत्रिकाओं में अग्रवाणी, हिंदी हृदय, बिहारिका, चेन्नै दर्पण, मधुराग / मधु बंसरी, अभिव्यक्ति, दक्षिण प्रकाश, सन् प्रिंटर्स साप्ताहिक, यूनिवर्सल न्यूज एंड व्यूज, डाउन-टाइम एक्सप्रेस, तमिलनाडु तेरापंथ बुलिटेन, आदान-प्रदान, विद्या वर्धिनी, सूर सौरभ आदि पत्र-पत्रिकाएँ शामिल हैं। इनकी हम संक्षेप में चर्चा करेंगे।

अग्रवाणी : अग्रवाल समाज (मद्रास) का सामाजिक मुख-पत्र 'अग्रवाणी' का प्रवेशांक दिसंबर 1996 में प्रकाशित हुआ था। इसका संपादन कार्य रमेशगुप्त नीरद देख रहे थे। अग्रवाल समाज की गतिविधियों की सूचना समाज के प्रत्येक सदस्य तक पहुँचाने के लिए 'अग्रवाणी' का प्रकाशन किया जा रहा था। प्रवेशांक के संपादकीय में लिखा गया है—‘समाज के कार्यकर्ताओं और आम आदमी के बीच संवाद की स्थिति बनाए रखना आज के इस यांत्रिकी-युग में बहुत आवश्यक है। ‘अग्रवाणी’ इसी दिशा में एक पहल है।’ आरंभ में इस पत्र के नियमित रूप से प्रकाशित होने की आशा थी, किंतु यह अनियतकालीन बनकर रह गई। समय-समय पर इसके अंक प्रकाशित हुए हैं। सुनीता जाजोदिया इस पत्र के कार्यकारी संपादक का दायित्व निभाती रहीं। 1/4 साइज में चार पृष्ठीय इस पत्र में महत्वपूर्ण लेख, सामयिक महत्व की कविताएँ, अग्रवाल संस्थाओं की गतिविधियों के समाचार प्रकाशित हो रहे थे। इनके अलावा अन्य फुटकर रचनाएँ भी छपती थीं। ‘रोजगार की खिड़की’, ‘तलाश (वर-वधू)’, ‘रोशनी’, ‘खबरनामा’ आदि इसके प्रमुख स्तंभ हैं। कालांतर में पत्रिका के पृष्ठ बढ़ा दिए गए और कई अन्य स्तंभ भी जुड़ गएँ।

हिंदी हृदय : मद्रास महानगर के हिंदी कार्यक्रमों का मासिक वार्तावृत्त 'हिंदी हृदय' का प्रथम अंक अप्रैल, 1997 में प्रकाशित हुआ था। चेन्नै के उत्साही हिंदी सेवी डॉ. सुब्रमणियन विष्णुप्रिया 'हिंदी हृदय' के संपादक तथा प्रकाशक हैं। 'हिंदी हृदय' के नाम से एक साहित्यिक, सांस्कृतिक संस्था का संचालन भी डॉ. विष्णुप्रिया कर रहे हैं। उसी संस्था की गतिविधियों के अंतर्गत 'हिंदी हृदय' का प्रकाशन भी एक उल्लेखनीय कार्य है। रेल्वे के अंचल कार्यालय, चेन्नै में राजभाषा अधिकारी के रूप में कार्य करके सेवानिवृत्ति के बाद डॉ. विष्णुप्रिया 'हिंदी हृदय' पत्रिका प्रकाशित करने लगे थे। पत्रिका की रूप-रेखा और सामग्री के संदर्भ में कहा जा सकता है कि इसमें मूलतः चेन्नै महानगर में आयोजित हिंदी के विभिन्न कार्यक्रमों की रिपोर्ट प्रमुखता से प्रकाशित होती थीं। इसके अलावा इसमें कुछ अनुवाद साहित्य भी प्रकाशित हो रही थीं। आरंभ में चौथाई साइज के चार पृष्ठों में प्रकाशित होनेवाली यह पत्रिका कालांतर में आठ-दस पृष्ठों में निकलने लगी थी। पत्रिका के विभिन्न स्तंभों के शीर्षक रोचक लगते थे। साथ ही प्रत्येक

रिपोर्ट के अंत में संपादक की टिप्पणी 'लांगूल' शीर्षक से पठनीय होती थी, जिसमें विलक्षण कार्यों की संपादकीय टीका-टिप्पणी दी जाती थी। 'टिक-टिक-टिक' शीर्षक से आगामी हिंदी के कार्यक्रमों की सूची प्रकाशित की जाती थी। पाठकों के स्तंभ के लिए 'मुखामुखी' (मुक्कामुक्की भी) शीर्षक दिया गया था, जिसमें पाठकों के पत्रों का प्रकाशन किया जाता था, कुछ पत्रों के अंत में भी संपादक की टिप्पणी 'लांगूल' शीर्षक से प्रकाशित होती थी। 'भानुमती की पिटारी' के शीर्षक से अनूदित कविताओं को स्थान दिया जाता था, आमतौर पर तमिल, तेलुगु अथवा अंग्रेजी की कविताओं का हिंदी अनुवाद इस स्तंभ में प्रकाशित होते थे। 'हिंदी हृदय' में मुख्यतः सरकारी कार्यालयों, बैंकों, सार्वजनिक उपक्रमों में राजभाषा संबंधी गतिविधियों (हिंदी कार्यशालाएँ, संगोष्ठियाँ, विभिन्न समारोह आदि) की रिपोर्टों की अधिकता व प्रमुखता होती थी। 'राजभाषा सूचनाएँ' शीर्षक से कभी-कभी राजभाषा विभाग संबंधी ज्ञापन, सूचनाएँ आदि अंग्रेजी में प्रकाशित नज़र आती थीं। 'हिंदी हृदय' का तमिल परिशिष्ट भी हर महीना अलग रूप से प्रकाशित होता था, जिसकी प्रति माँगने वाले पाठकों को 'हिंदी हृदय' के साथ प्रेषित की जाती थी।

बेहिचक व्यंग्यात्मक टिप्पणियाँ आमतौर पर 'हिंदी हृदय' में देखी जा सकती थीं। हिंदी विरोधी राजनीति खेल का केंद्र मद्रास प्रदेश में हिंदी की गतिशीलता के प्रतीक के रूप में, किसी भी प्रकार के हिंदी संबंधी सार्थक-असार्थक प्रयास की ख़बर अथवा टिप्पणी 'हिंदी हृदय' में छपते रहने के कारण सहज ही चेन्नै से प्रकाशित इस पत्रिका की प्रासंगिकता थी।

बिहारिका : मद्रास बिहार युवक संघ की पत्रिका के रूप में 'बिहारिका' का एक ही अंक प्रकाशित हुआ था, जिसमें संघ की गतिविधियों के समाचार के अलावा कुछ साहित्यिक रचनाएँ भी छपी थीं। शायद संगठनात्मक, आर्थिक कारणों से पत्रिका का प्रकाशन स्थगित हो गया।

चेन्नै दर्पण : प्रगतिशील लेखक संघ, चेन्नै की ओर से 'चेन्नै दर्पण' पत्रिका के दो अंक प्रकाशित हो चुके हैं। श्री नरेश शर्मा इस पत्रिका के संपादक थे। संघ के सदस्यों की साहित्यिक रचनाएँ उक्त अंकों में प्रकाशित हुई थीं।

मधुराग / मधु बंसरी : 9 अगस्त, 1997 'मधुराग' मासिक पत्रिका का प्रवेशांक प्रकाशित हुआ था। बाल साहित्यिक पत्रिका के रूप में इसमें छात्रों की स्तरीय मौलिक रचनाएँ प्रकाशित होती थीं। बाद में इसके संपादक-प्रकाशक ने इस पत्र को 'मधु बंसरी' का नाम दिया था और पत्रिका में सभी प्रकार की सामग्री को स्थान दे रहे थे। आरंभ में जब पत्रिका 'मधुराग' के नाम से प्रकाशित होती थी, तब प्रत्येक माह के अंक को एक विशेषांक का नाम देते थे। इस पत्रिका के संपादक प्रकाशक श्री जवाहर लाल मधुकर थे। छात्रों की स्तरीय मौलिक रचनाएँ प्रकाशित करना इस पत्रिका का मुख्य लक्ष्य था। अब इसका परिवर्तित नाम 'मधु बंसरी' के साथ ही पत्रिका में फुटकर रचनाएँ भी छप रही थीं। 'मधु बंसरी' चौथाई आकार के आठ पृष्ठों से प्रकाशित होती थीं, कभी-कभी कुछ अतिरिक्त पृष्ठ जोड़े गए थे। प्रत्येक अंक में संपादकीय प्रकाशित होती था जो कभी पत्रिका की स्थिति-गति की जानकारी एवं सहयोग की अपेक्षा रखते हुए कभी किसी सामाजिक घटना पर केंद्रित होता था।

अभिव्यक्ति : 'अभिव्यक्ति' मासिक का प्रकाशन, बिहार एसोसियेशन, चेन्नै की ओर से होती रही है।

सामाजिक गतिविधियों की खबरों के साथ-साथ कुछ साहित्यिक रचनाएँ भी इस पत्रिका में प्रकाशित होती थी। श्री प्रदीप कुमार इस पत्रिका के संपादक थे।

दक्षिण प्रकाश : श्री बी. पी. गोस्वामी के संपादन एवं प्रकाशन में 'दक्षिण प्रकाश' के नाम से साप्ताहिक पत्रिका का प्रवेशांक लगभग पाँच सौ पृष्ठों के एक बृहद् विशेषांक के रूप में 1998 में प्रकाशित हुआ था, जिसमें लगभग आधे से अधिक पृष्ठों में विज्ञापन प्रकाशित हुए थे। इस पत्रिका के अन्य रूपों में प्रकाशन के लिए भी प्रकाशक द्वारा प्रयास किए गए। वर्ष 2005 में दैनिक के रूप में पंजीकृत होकर 'दक्षिण प्रकाश' आठ पृष्ठीय रंगीन अख्खबार के रूप में नियमित प्रकाशित हो रहा है। दैनिक 'दक्षिण प्रकाश' की प्रकाशक श्रीमती संतोष गोस्वामी और श्री बी. पी. गोस्वामी इसके संपादक हैं।

सन् प्रिंटर्स साप्ताहिक : श्री बी. पी. गोस्वामी के संपादन में 'सन् प्रिंटर्स' के नाम से एक साप्ताहिक का प्रकाशन चेत्री से हुआ था। कुछ अंकों के प्रकाशन के बाद शायद इसका प्रकाशन स्थगित है।

यूनिवर्सल न्यूज एंड व्यूज : 'युनिवर्सल न्यूज एंड व्यूज' के नाम से एक समाचार पत्र का प्रकाशन श्री गणपति और श्री बी.पी. गोस्वामी के संयुक्त प्रयासों से चेत्री से आरंभ हुआ था, जिसके एकाध अंक ही प्रकाशित हो पाए हैं।

डाउन-टाऊन एक्सप्रेस : 'डाउन-टाऊन एक्सप्रेस' के नाम से एक अनियतकालीन हिंदी पत्रिका के कुछ अंक यदा-कदा प्रकाशित हुए हैं। इस पत्रिका के संपादक ए. के. करुण हैं।

तमिलनाडु तेरापंथ बुलिटेन : राजस्थानी तेरापंथियों में सामुदायिक चेतना जगाने की दृष्टि से श्री बी.पी. गोस्वामी के संपादन में 'तमिलनाडु तेरापंथ बुलिटेन' के नाम से कुछ अंक प्रकाशित हुए हैं।

आदान-प्रदान : केंद्रीय हिंदी निदेशालय, नई दिल्ली के अनुदान से प्रकाशित होनेवाली पत्रिकाओं में 'आदान-प्रदान' एक है। 'आदान-प्रदान' का प्रवेशांक वार्षिक अंक के रूप में 1999 में प्रकाशित हुआ था। 'आदान-प्रदान' के प्रकाशन का उद्देश्य स्पष्ट करते हुए प्रवेशांक के संपादकीय में लिख गया है- 'भारतीय साहित्यों की उत्कृष्टता की सुगंध सर्वत्र - फैले-इसी उद्देश्य को लेकर भाषा संगम (त.ना) का तुलनात्मक अध्ययन केंद्र गत कुछ वर्षों से सेवाएँ करता आ रहा है। विभिन्न प्रांतों एवं विभिन्न भाषा-भाषी विद्वानों को आमंत्रण कर संगोष्ठियाँ चलाई तथा आपसी विचारों के आदान-प्रदान की व्यवस्थाएँ की जिससे आज की युवा पीढ़ी में नवजागृति पैदा हो सके। हमारा विचार हुआ कि भाषण के रूप में या वार्तालाप के रूप में जनित वे उत्तम विचार हवा की लहरों में विलीन न होकर, साकार रूप धारण करे तो भावी पीढ़ियाँ लाभान्वित हो सकती हैं। अतः उन विचारों को प्रकाशन में लाने का निर्णय हुआ। तदनुसार केंद्रीय हिंदी निदेशालय के योगदान से इस वार्षिक-पत्रिका का यह प्रथम अंक आपके हाथों में अलंकृत है।' प्रवेशांक में 18-4-99 को 'भाषा संगम' द्वारा आयोजित गोष्ठी में विद्वान वर्ग द्वारा पढ़े गए शोध पत्रों का सार तथा उक्त आयोजन में दिए गए भाषण कार्यक्रम के चित्र प्रकाशित हुए हैं। इस पत्रिका में स्तरीय संपादकीय के अलावा तुलनात्मक और शोधपरक कई आलेख प्रकाशित होते थे। प्रवेशांक में डॉ. राजेश्वरानंद शर्मा, डॉ. मधु धवन, डॉ. एस. निर्मला मौर्य, प्रो. एस. मुकुमरन, विश्वनाथ, हिमांशु शेखर, चक्रवर्ती,

डॉ. आर. एम. श्रीनिवासन, डॉ. रत्न प्रकाश, डॉ. आरसू, डॉ. एन. सुंदरम, डॉ. एम. शेषन आदि के शोध-आलेख शामिल हुए थे। 'आदान-प्रदान' का दूसरा अंक भी वार्षिक अंक रहा जो वर्ष 2000 में प्रकाशित हुआ था। दूसरे अंक में कुछ हिंदी लेख, कुछ तमिल लेख और एक तेलुगु लेख प्रकाशित हुए थे। एकाध अनूदित रचनाएँ उक्त अंक में प्रकाशित हुई थीं। कुछ समय बाद यह पत्रिका ट्रैमासिक के रूप में प्रकाशित होती रही है। इस पत्रिका को केंद्रीय हिंदी निदेशालय की ओर से अनुदान प्राप्त होता रहा है। अनुवाद के माध्यम से आदान-प्रदान का प्रयास स्वागत योग्य है।

विद्या वर्धिनी : भारतीय स्टेट बैंक अफसर्स एसोसियेशन संस्थान (एस.बी.आई.ओ.ए. इंस्टिट्यूट), चेन्नै की ओर से अंग्रेजी हिंदी मासिक 'विद्या वर्धिनी' का प्रकाशन किया गया था। मुख्यतः इस पत्रिका में संस्थान की ओर से पत्राचार द्वारा संचालित बोलचाल हिंदी पाठ्यक्रम, बोलचाल अंग्रेजी पाठ्यक्रमों के छात्रों के उपयोगार्थ शैक्षिक सामग्री प्रकाशित की जाती थी। आठ पृष्ठीय इस छोटी-सी पत्रिका को शैक्षिक पत्रकारिता का अंग मान सकते हैं। डॉ. एस. विजया इस पत्रिका की संपादक रही है।

सूर सौरभ : केंद्रीय हिंदी निदेशालय, नई दिल्ली की हिंदी पत्रिकाओं के लिए अनुदान योजना का लाभ उठाते हुए 'सूर सौरभ' पत्रिका का प्रकाशन दक्षिण भारत से आरंभ किया गया था। सूर स्मारक मंडल, आगरा के डॉ. सिद्धेश्वरनाथ श्रीवास्तव इसके प्रकाशक हैं। आरंभ में ट्रैमासिक 'सूर सौरभ' का प्रकाशन श्रीरामुलु के संपादन में हैदराबाद से होता था। श्रीरामुलु के स्वर्गवास के बाद यह पत्रिका चेन्नै से प्रकाशित होती रही। इस पत्रिका के प्रकाशन का उद्देश्य पत्रिका के अंकों में स्पष्ट किया गया है कि सूर साहित्य का प्रकाशन, इसकी व्यवस्था तथा सामाजिक सार्थकता पर विचार, भक्ति, ज्ञान एवं भारतीय साहित्य का प्रकाशन, प्रचार और प्रसार करना 'सूर सौरभ' के उद्देश्य हैं। 'सूर सौरभ' के उद्देश्य स्पष्ट करते हुए प्रधान संपादकीय में लिखा है – 'दक्षिण भारत से इसके प्रकाशन का मूल उद्देश्य हिंदी और अहिंदी भाषी क्षेत्रों को एक दूसरे के निकट लाना है। प्रायः सभी विद्वानों का यह अनुभव है कि दोनों ही क्षेत्रों के विद्वान भी एक दूसरे के प्रमुख कवियों और साहित्यकारों की रचनाओं, जीवनी तथा भारतीय भाषाओं के लिए की गई उनकी राष्ट्रीय सेवाओं से अनभिज्ञ हैं। मेरा व्यक्तिगत अनुभव भी यही रहा है कि महाविद्यालयों में पढ़ानेवाले हिंदी अध्यापक भी अहिंदी भाषी क्षेत्रों के प्रमुख संत कवियों के संबंध में जितना जानना चाहिए उतना नहीं जानते। यही दशा अहिंदी क्षेत्र के विद्वानों की है। वे भी दक्षिण की भाषाओं के सुविख्यात कवियों और साहित्यकारों के संबंध में बहुत कम जानकारी रखते हैं।' (जुलाई-सितंबर, 2000 अंक) केंद्रीय हिंदी निदेशालय की आर्थिक सहायता प्राप्त होते रहने के बावजूद इसके स्वतंत्र अस्तित्व के लिए भी प्रकाशक प्रयासरत दीख पड़ते हैं। इसका उल्लेख संपादकीयों में करते हुए आजीवन सदस्यता ग्रहण करने हेतु पाठकों से अनुरोध किया गया है। सुंदरम और गोविंदराजन इस पत्रिका के संपादन कार्य में जुड़े हुए थे।

ऐसे कई प्रयासों से समाचार-पत्रों, पत्रिकाओं के प्रकाशन से चेन्नै महानगर एवं तमिलनाडु की हिंदी पत्रकारिता का कई रूपों में विकास सुनिश्चित हुआ।

Head of Department-Hindi, Pondicherry University, Puducheri - 605 014

जन्मदिन 7 मई पर विशेष

विश्व गुरु रवींद्र

- डॉ. एम. लोकनाथन

लगभग प्रतिदिन हम अपने स्कूलों में राष्ट्रगीत गाते हैं और शायद 'जनगणमन' ही पहला गीत है जो स्कूलों में सीखते हैं। खेल-कूद में हरेक दल अपने-अपने 'राष्ट्रगीत' गाते हैं। पुरस्कार वितरण के समय विजेता दल या व्यक्ति के देश का राष्ट्रगीत बजाकर राष्ट्रध्वज को ऊँचा करके गौरवान्वित किया जाता है।

हमारे राष्ट्रगीत 'जनगण मन' की रचना किसने की है? वे ही हैं बंगला कवि रवीन्द्रनाथ ठाकुर। 7 मई, 1861 को जन्मे रवींद्रनाथ ठाकुर को भारत के आधुनिक महान् कवि माना जाता है। उनका कवि बनना एक संयोग की बात है। वे कानून पढ़ने के लिए विलायत गए, परंतु विषय उनको पसंद नहीं आया। वे लिखने में मन लगाने लगे। जल्दी ही वे एक सफल लेखक, गीतकार, कवि, दार्शनिक और शिक्षक बन गए। वे बंगला में ही लिखते थे। कलकत्ते में उनकी कहानियाँ बहुत प्रसिद्ध हुईं तथा अपने कुछ नाटकों में उन्होंने खुद अभिनय भी किया।

वे सन् 1912 में अपने पुत्र के साथ इंग्लैण्ड गए थे। ठाकुर की पुस्तक 'गीतांजलि' जो अब चिर स्मरणीय बन गई है, उसका अंग्रेजी में अनुवाद किया गया। काश! यह दुनिया इस महत्वपूर्ण पुस्तक के स्वाद चखने से वंचित रह जाता क्योंकि लण्डन के एक सब-वे में ठाकुर ने इस पुस्तक को उसके अनुवाद के साथ खो दिया था। भाग्य ने साथ दिया कि पुस्तक वापस मिली। संयोग से ठाकुर ने इसे अपने मित्र रोथेन् स्टीन को दिखाया था। वे इतना प्रभावित हुए कि दौड़ते-दौड़ते अंग्रेजी कवि डबल्यू.बी.एट्स के पास ले गए। सन् 1913 में 'गीतांजलि' के आधार पर कवि रवींद्रनाथ ठाकुर को 'नोबेल पुरस्कार' प्राप्त हुआ। पहली बार ऐसे हुआ कि पश्चिम जगत के बाहर के किसी ने यह पुरस्कार जीता है और अधिक मान्यता उन्हें तब प्राप्त हुई जब ब्रिटिश साम्राज्य ने उन्हें नाइट (Knight) की उपाधि से विभूषित किया और सन् 1915 में आप 'सर' बने। खैर! पंजाब में भारतीय सेवाओं पर अंग्रेजों के हत्याकाण्ड के खण्डन में आपने इस 'सर' की उपाधि का परित्याग किया। इस अवज्ञापूर्वक कार्य के अतिरिक्त, गांधी जी के साथ हार्दिक मैत्री के बावजूद आप राजनीति से दूर ही रहे।

रवींद्रनाथ ठाकुर की कहानियों, नाटकों एवं उपन्यासों की गिनती आश्चर्यजनक होगी। बहरहाल उल्लेखनीय है कि उनके गीतों की संख्या दो हजार से अधिक मानी जाती है। उन्होंने न केवल गीत लिखे, परंतु उनके लिए तर्ज भी दिए और संगीत की यह थैली विश्व-भर में 'रवींद्र संगीत' नाम से प्रसिद्ध हुई। महत्वपूर्ण बात यह है कि आप शांतिनिकेतन में 'विश्व-भारती' विश्वविद्यालय के संस्थापक हैं।

No; 17, NSC (II Cross) Street, Venkatapuram, Ambathur, Chennai - 600053

हिंदी को समृद्ध करती 'गुजराती की काव्य-संपदा'

- बी. एल. आच्छा

किसी भी भारतीय भाषा के सृजन का हिंदी में आना न केवल हिंदी बल्कि भारतीयता की धरोहर है। क्रांति कनाटे ने 'गुजराती काव्य संपदा' के अनुवाद के बहाने पंद्रहवीं शती के नरसिंह मेहता से लेकर इक्कीसवीं सदी तक के नामचीन गुजराती कवियों की चुनिंदा कविताओं का अनुवाद कर हिंदी को समृद्ध किया है। भारतीयता का अंतरंग स्वर इस देश की प्रकृति, देशानुराग, भक्ति का अध्यात्म, राष्ट्रीय जागरण, संवेदनाओं के कोमलतम वैयक्तिक पार्श्व, विरह और एकाकीपन की अनुभूतियों जैसे अंतरंग स्वर इन कविताओं में प्रस्फुटित हुए हैं। इसके बावजूद ये कविताएँ गुजरात का अपना मानस-बिंब रचती हैं।

हिंदी की काव्यधारा में अनेक आंदोलनों की छाया मौजूद है। वादों वाली काव्यधाराएँ अपनी पहचान बनाती हैं। उनमें छायावादी कल्पनाशीलता है और युगीन यथार्थ का चित्रण भी। गुजराती काव्यधारा इन आंदोलनों से मुक्त नजर आती है। गांधी की इस छवि से अनुप्राणित काव्य संपदा में राष्ट्रीय जागरण की एक अंतःप्रवाही साबरमती बिन कोलाहल और झंडाबरदारी समाई हुई है। यह वैसा ही है, जैसे छायावाद को प्रकृति काव्य की कल्पनाशीलता में पलायनवादी कह दिया गया था, मगर उसके भीतर सांस्कृतिक जागरण के ताप को बहुत बाद में पहचान मिली। कई आलोचकों ने छायावाद को शक्ति का काव्य कहा। गुजराती की इस काव्यधारा में भक्ति का सरल-तरल स्वर है, तो राष्ट्रीय जागरण की मूर्त मुखरता भी। इसमें प्रकृति के नए नए बिंब छायावादी आभास देते हैं, पर समूची काव्य यात्रा में आजादी का घोष सुना जा सकता है और आधुनिकता के इस युग में विस्थापन और एकाकीपन की व्यथा को भी। इसलिए समकाल इन कविताओं के उत्तरार्द्ध काल में जितना ध्वनित है, उतना ही प्रारंभिक काल रागानुगा भक्ति में; पर इनमें आंदोलनों की हलचल नहीं है, युग की छाया अवश्य प्रतिबिंबित है।

संपादिका-अनुवादिका ने प्रत्येक कवि का परिचय तो दिया ही है, साथ ही उनके अवदान और समीक्षा के आलोचकीय उद्धरण भी दिए हैं, ताकि गुजराती कविता में उनके मूल्यांकन और महत्व की पड़ताल हो सके। सुखद यह है कि गुजराती और हिंदी एक ही मूल की भाषा है, इसलिए अनुवाद में गुजराती की स्थानीयता या आँचलिकता की झलक हिंदी पाठक के लिए आसान है। निश्चय ही यह श्रम साध्य कार्य है, पर गुजराती में इन कवियों के मुकाम को रेखांकित करता है। अनुवादित होकर ये कविताएँ कुछ शब्दों को छोड़कर हिंदी की लगती हैं, यह अनुवाद की सहजता है। दरअसल कविता भावसंपदा को जीती है और अन्य भाषा में उसका रूपांतरण हो जाए तो यह अनुवाद की सरसता है।

नरसिंह मेहता पंद्रहवीं सदी के भक्त कवि हैं। प्रकृति, जीवन और देह में श्रीहरि को ही देखते हैं, बिल्कुल अद्वैत रूप में-'वृक्ष में बीज तू, बीज में वृक्ष तू।' यह भक्ति आत्मतत्व को परखती है, बाह्य कर्मकांडों को नहीं। न शास्त्रों की रटन को ही लक्ष्य मानती है। बल्कि रसखान की तरह श्रीहरि और ब्रज-धूलि में रम जाती है। 'दयाराम अठारहवीं सदी के कवि हैं, जिन्हें ब्रजमंडल इतना प्रिय है कि बैकुंठ तक नहीं जाना

चाहते। प्रयोग के तौर पर उन्होंने भी हिंदी महाकाव्यों के बारहमासा की तरह एक ही कविता में राधिका की बारहमासा अनुभूतियों को व्यक्त किया है। उन्नीसवीं सदी की कवयित्री गंगासती की भजन संपदा की धुरी है - 'मेरु तो डोले, पर जिसका मन ना डोले। भले ही टूट पड़े ब्रह्मांड जी।' सद्गुरु के शब्दों की अधिकारी और व्यक्ति के भीतर के मान से रहित यह निष्ठा प्रभु प्राप्ति की राह बना देती है। इसी काल के हरिहर भट्ट की 'एक ही दे चिंगारी, महानल!' तो गांधी की प्रार्थना सभा और पाठशालाओं में गाई जाती थी। इस अकेली कविता से वे जीवन्त हैं।

पद्मश्री दुला भाया काग बीसवीं सदी के कवि हैं। यद्यपि संकलित कविता में राम भक्ति का दर्शन है। केवट प्रसंग में 'उत्तराई' के लिए राम पूछते हैं, तो केवट का उत्तर समर्पण की चातुर्यभरी निष्ठा का उदाहरण है- 'नाई से कभी नाई ना ले, हम तो धंधा भाई जी। काग ना ले कभी खलासी से खलासी उत्तराई जी।' अन्य कविताओं में अनुवादिका ने प्रकृति वर्णन के इंद्रधनुषी रंगों, शोषितों की पीड़ा, राष्ट्र की अखंडता और भूदान आंदोलन में दान का उल्लेख किया है। झवेरचंद मेघाणी स्वतंत्रता-पूर्व के कवि हैं। इसलिए उनकी कविताओं में परतंत्रता और शोषितों की पीड़ा का स्वर मुखरित है। केसरिया रंग में पगी उनकी राष्ट्रभक्ति, दलित-राज की नवशक्ति, पिंजरे के पंछी की राष्ट्रवादी व्यथा-कथा, सर्वमंगल की आकांक्षा और गांधी के साथ सकर्मक जुड़ाव वाली कविताओं का आर्तस्वर उन्हें नवजागरण से मंडित करता है। प्रकृति बिंबों में भी जागरण के युगीन स्वर झंकृत करते हैं। कारावास से वापसी पर गांधी को समर्पित ये पंक्तियाँ 'पराजित को अक्षत-कुंकुम लगाओ। पराजित के छत्र-चंवर छुलाओ। पराजित का मुख देखो योद्धाओ! सब रुके, न रोको! एक बेताल राग' ऊर्जस्वित स्वर का प्रयाण है। जनोन्मुखी सोच और गांधी का सकर्मक अहिंसा का संदेश उनकी कविताओं का आंतर-पक्ष है।

भारतीय ज्ञानपीठ से पुरस्कृत उमाशंकर जोशी का प्रदेश सुविख्यात है। उनकी कविताओं में भारतीय आत्मा का जितना अंतर्नाद है, उतनी ही लयात्मक अनुगूँज। नए सादृश्यों का प्रयोग तो 'जीवन-धूप' के रूप में खिला है, मगर इस बिंब में कितना कुछ समाया है- 'कवि बोला, यह कपड़े धो रहा' उनमें से उड़ते जलबिंदु/ हृदय नाचता, इंद्रधनु देखकर/ जो जन्मता यह शत वर्ष पूर्व/तो पाता वर्द्धस्वर्थ का पद।' 'धोबी' शीर्षक कविता में कवि, वैज्ञानिक आदि इन स्वचिल से रंगों को निहार रहे हैं, पर 'शूद्रत्व' संज्ञा से जड़ित धोबी इस सौंदर्यबोध से अनजान। प्रकृति का वैभव इन कविताओं में भरपूर है, मगर तिजोरी और हँसिया का द्वंद्व पेट की आग और शोषण को मुखर कर जाते हैं। हिंदी में चाहे इसे प्रगतिशील कविता कह दें या गुजराती कविता में जीवन का यथार्थ पर ये कविताएँ इस तरह की चेतना में जागृति तो लाती हैं, पर 'वाद' से नामित नहीं होते।

राजेंद्र शाह भी ज्ञानपीठ से सम्मानित हैं। छायावाद सी दार्शनिकता, चिरंतन सत्य, प्रणय और विरह की अनुभूतियाँ, शब्दों का मंत्रत्व, जाति से परे का निर्मल कबीरत्व, शोषित की चिंता और चेतनामय दृष्टि एक विशेषण-विपर्यय (Transferred Epithet) गढ़ती है- 'उज्ज्वल अंधियार।' इसमें जितनी दर्शन की 'चिति' है, उतना ही शोषण रहित मानवता की जीवन-आकांक्षा। बीसवीं सदी के कवि जयंत पाठक अपने लघु प्रकृति चित्रों में जीवन को गहराई से संजोते हैं- बटेर की सीटी और चिड़िया का चीख। 'जन्मदिन पर'

कविता में-'इस धरा का दुख अपार' पर उसे भी उस पार ले जाने की प्राणवत्ता है। 'जी गया होता' कविता में रिश्तों की दरकार भरे चाहत के शब्दों की संवादी आकांक्षा है। हसित बूच के काव्य में इस पार-उस पार की रहस्य भावना बहुत कुछ छायावादी है। पर 'मेरे गरबे में' कविता जीवन का उल्लास गीत की लय में सधा है। 'समझ गई मैं नाथ' कविता में प्राकृतिक उपमानों के माध्यम से ईश्वर और आत्मा की अद्वैतता हिंदी की छायावादी कविता का ही पाठ बन जाती है।

जगदीश जोशी की कविताओं में ईश्वर-प्रकृति-कवि का त्रिक बनता है। जीवन की गहरी चाह उनकी कविताओं का स्पंदन है- 'मैंने मौत से भी चाल चली है। अपने बेचैन आकाश में मैंने सूर्य-चंद्र को एक साथ प्रकटाया है।' विकास की दौड़ में सभ्यता का संकट और प्रकृति का बेशुमार दोहन उनकी चिंता है। पौराणिक कथा में उन्होंने समकाल को सहेजते हुए गीतों की लय को साधा है। सूरज का तकिया, दूज के चाँद की नाव, केले के पत्ते सी मखमली हवा, निर्वसन पवन, समुद्र की इंद्रधनु मुद्रा, पेड़ के झरोखे, नदी में मछलियों के प्रतिबिंब जैसे उपमान चौंकाते हैं। पर अतीत और वर्तमान, समृतियों और सपनों में जीवनानुभूतियों को संजो देते हैं। छायावाद-सी मूर्त-अमूर्त रूपकों की प्रयोगधर्मिता का कला पक्ष जीवन की अनदेखी नहीं करता - 'तुम्हारे सभ्य समाज में/विचरते वनपशुओं को/दावानल बन जला दूँ/ भरम कर दूँ?'

चिनू मोदी सहज कवि हैं। जीवन की दर्दीली अनुभूतियों को वे भारी भरकम शब्दों से चमकाते नहीं हैं। संवाद और मिथकों के हल्के से संकेतों से इस तरह छिटका देते हैं कि आहत मन, एकाकीपन, प्रीत के भाव, भागते जीवन का दैन्य-विषाद, आकांक्षाओं के सम्मुख अवरोध पाठकीय सहचर का हिस्सा बन जाते हैं। 'कैसे हो, अच्छे हो?' कविता के भीतर एक खोखली सी व्यंजना खारे जल का स्वाद चखाती है। ऐसे ही कुछ उपमान बहुत व्यंजक हैं- 'डामर का यह काला रस्ता नाग बनकर ड़सता', या कि 'पानी का रे जीव, रेत में तैरने तड़पे!' या कि 'जरा से सुख का ये तूफान देखो/ ग़ज़ल नाम का गाँव बसने न दे।' मनोज खंडेरिया की कविताओं में सांस्कृतिक राग और लोक-जीवन की तन्मयता बहुत गहरी है। कहीं कहीं भक्ति का उदात्त छोर भी शाब्दिक व्यंजना में करताल बजा जाता है। मिथकीय जु़़ाव से ये कविताएँ पुराने कालक्रम को आधुनिक व्यंजना तक ले आती हैं। आसान अदायगी और वास्तविकताओं का प्रतिबिंबन अंतरंग रूपसों की छाया है- 'आज तो भावहीन अंधेरे में खड़ी हूँ।' ग़ज़लों में भी शब्दों का चयन दृश्यानुभूतियों की लड़ी को असरदार बना देता है- 'हजारों मिलेंगे मयूरासन के सिंहासन / नयन के अशुज्जित तख्त का कोई विकल्प नहीं।'

महेंद्रसिंह जड़ेजा के लिए कविता तो कवि के सीधे पाठक से संप्रेषण है - एक हृदय से दूसरे हृदय तक पहुँचे/ वह है कविता।' उनके भीतर की दर्शन की गहराइयाँ हैं, जो प्रतीकात्मक रूप से सार्वकालिक सत्ता का बोध कराती है- 'ईश' कहाँ विलीन होगी चेतना तेज को प्रकटाता अंधियार हूँ।' जिंदगी सदैव हरी कच्च नहीं होती, न हर पल प्रफुल्लता का। यही जीवन है और जीवन की नियति भी। इसलिए मृत्यु के अवसाद को भी कितने उजले चेतस के साथ व्यक्त कर जाते हैं- 'मेरे लिए हुए समय के फूल पर/मेरी मृत्यु की तितली आकर बैठेगी।' सृष्टि-चेतना और उसमें अपनी सत्ता के वितान से उनकी कविताएँ शाश्वत

नजर आती हैं। जीवन की आकांक्षा इस सारे दर्शन में केंद्रीय तत्व है।

गुजराती की इन कविताओं में भक्ति और संस्कृति के राग जितने गहरे हैं, समकाल की व्यथा भी उतनी ही मुखर। इनमें मृत्यु की छाया के बावजूद जीवन की आस्था मुखरित है। आज मनुष्य, प्रकृति और बदलते जीवन के संघर्ष अब साहित्य के केंद्रीय स्वर बन गए। गुजराती की इस काव्य संपदा में इस केंद्रीय स्तर को देखा जा सकता है।

गुजराती की काव्य संपदा / अनुवादक: क्रांति कनाटे / ₹-170/-

उत्तरप्रदेश हिंदी संस्थान, लखनऊ / 2021

Northtown Apartment, Plot No 701, Tower 27, Steephenson Road,

(Binny Mills) Perambur, Chennai - 600 012

कविता

तुम्हारी आँखों ने पिये हैं
पूरी एक उम्र के आँसू
लोहा गलाने वाली
भट्ठी के सामने,
पसीना भी
कहाँ टपक सका है
जमीन पर किसी वक्त
सदा ही
सिर से चलकर
पेट पर आते ही
सूख गया है
लोहे की
आग से भी
अधिक गरम
भूख की आँच से
साँस से तुम
उगलते रहे हो
वह कीचड़
जो तुम्हारे सबसे छोटे बच्चे ने

मजदूर

- प्रो. देवराज

अपने रक्त से तैयार की थी,
किसी ईंट पर
कभी
तुम्हारा नाम नहीं लिखा गया
न तुम्हें नसीब हुआ
कभी पक्का घर
तुम
कभी पत्नी को
दूसरा लहंगा नहीं दिला पाए
और बच्चों को
मौसम के आम
या मकई का भुट्ठा
या टाफी
हर दोपहर तो
प्याज और लूनी रोटी भी नहीं
किस मिट्ठी के बने हो तुम
तुम्हारी पत्नी/ तुम्हारे बच्चे
किस हवा को
पति हो तुम

C-112, Alaknanda Apartment, Rampuri, Po. Chander Nagar - 201011, Zilla, Gaziabad (NCR), UP

विश्वबंधुत्व का संदेश

- डॉ. राजलक्ष्मी कृष्णन

हिंदू दर्शन बहुत ही व्यापक है। हिंदू दर्शन को समझने के लिए हमें शंकराचार्य, विवेकानन्द, रामकृष्ण परमहंस, अरविंद के बारे में जानना होगा। आज सारे विश्व में अहिंसा का राज्य है, सभी केवल अपना सुख चाहते हैं, अपने स्वार्थ के लिए हिंसा करने को भी तैयार रहते हैं। हमारे वेदों में यह स्पष्ट कहा गया है कि- लोकाः समस्ताः सुखिनो भवन्तु। यही सनातन धर्म रूपी भवन की आधार शिला है। विश्व के सभी मनुष्य सुखी रहें। यही सभी वैदिक धर्म के ऋषि मुनियों ने हमें संदेश दिया है। हमारा भारत वेदों का प्रचार-प्रसार करनेवाली प्रबुद्ध भूमि है। यह भूमि वेदों का सम्मान करनेवाली भूमि है। ईश्वर एक है। वही सत्य है। परमेश्वर का रूप समझकर यहाँ आकाश, वायु, अग्नि, जल, भूमि, वनस्पति सभी की आराधना की जाती है। 'वेद' शब्द का अर्थ है ज्ञान, जिसके द्वारा व्यक्ति परमात्मा का ज्ञान प्राप्त करता है। वेद को हम तीन शाखाओं में बाँट सकते हैं और वे हैं- कर्मकांड, उपासनाकांड और ज्ञानकांड। हमारी समस्त विधाएँ इन तीनों में समायी हुई हैं। गीता में कहा गया है कि, 'जब-जब धर्म की हानि होती है और अधर्म का उत्थान होता है, तब-तब ईश्वर अवतरित होते हैं और धर्म की रक्षा करते हैं।'

प्राचीन ऋषि और अरविंद जैसे आधुनिक दार्शनिक भी कहते हैं कि नर-नारायण और परमेश्वर भी इस वैदिक संस्कृति को सुरक्षित रखने के लिए आज भी भारत के अनेक कोनों में सूक्ष्म रूप धारण करके तपस्या कर रहे हैं। उनका मुख्य उद्देश्य विश्व के समस्त जीवों का कल्याण मात्र है। रामकृष्ण परमहंस और विवेकानन्द बहुत बड़े दार्शनिक थे। विवेकानन्द रामकृष्ण परमहंस के शिष्य थे। विवेकानन्द का असली नाम नरेंद्र था। जब वे संकटों से धिरे थे तब वे समाधि में चले गए और जागने पर उन्होंने कहा कि 'मैं बहुजन हिताय, बहुजन सुखाय कार्य करूँगा।' जब उनके गुरु समाधि में चले गए तब वे नरेंद्र से स्वामी विवेकानन्द बन गए और विश्व कल्याण के लिए अपना संपूर्ण जीवन व्यतीत कर दिया।

लोगों में होने वाले 'सर्वधर्म सम्मेलन' में भाग लेने के लिए वे 31 मई, 1893 को अमेरिका गए। रशिया की आध्यात्मिक उन्नति के रूप में मंदिरों, बौद्ध मठों का दर्शन करते हुए कनाडा होकर शिकागो पहुँचे। वहाँ की उन्नति देखकर और भारत की दुर्दशा देखकर वे बहुत दुःखी हुए। धनराशि उनके पास अधिक नहीं थी, और साधन भी बहुत कम थे। अपने मित्रों की सहायता से वे शिकागो सम्मेलन में भाग ले सके। 11 सितम्बर, 1891 में शिकागो धर्म सम्मेलन में उनका व्याख्यान हुआ। वक्तव्य में उन्होंने 'मेरे भाइयो और बहनो' कहकर संबोधित किया। उन्होंने इस वाक्य द्वारा समस्त विश्व के लोगों को संबोधित किया। वहाँ उपस्थित लोग मंत्रमुग्ध होकर उनके भाषण सुनते रहे। यही विश्वबंधुत्व का संदेश था। उनके मन में हमेशा विश्व कल्याण की भावना थी। उन्होंने यही संदेश दिया कि सभी धर्मों का सम्मान करना हमारी प्रवृत्ति है, सभी के दुःख और सुख में सम्मिलित होना हमारा कर्तव्य है। विश्व कल्याण ही हमारा लक्ष्य होना चाहिए। न केवल अमेरिका परंतु फ्रान्स, लंदन, इटली, स्विजरलैंड आदि अनेक देशों ने उन्हें आमंत्रित किया। उन्होंने लोगों से कहा कि हमारा देश 'जिओ और जीने दो' में विश्वास रखती है। एक

स्थान पर सभी धार्मिक ग्रन्थों के नीचे गीता को रखा गया, इससे वे बहुत दुःखी हुए। उन्होंने गीता को सभी धार्मिक ग्रन्थों के ऊपर रखते हुए कहा कि गीता सब धर्मों का मूल है। विविध धर्मों पर उसका प्रभाव है और सबका भार वहन करने में वह समर्थ है। गांधी जी के समान उन्होंने भी अहिंसा पर जोर दिया। संपूर्ण विश्व में उन्होंने भारतीय धर्म और संस्कृति का डंका बजाया था।

भारतवासियों के लिए उनका संदेश था, राष्ट्र देवता ही हमारे आराध्य देव हैं। उन्होंने गर्व से कहा कि मैं भारतवासी हूँ। भारतवासी सभी मेरे भाई हैं। भारत की मिट्टी मेरा स्वर्ग है और भारत का कल्याण ही मेरा कल्याण है। उनका विचार था कि समस्त विश्व ब्रह्म का स्वरूप है। उनका कहना था कि हमें भय और निर्बलता का त्याग करना होगा- यही उपनिषद की शिक्षा है। विवेकानंद ने देश-विदेश का भ्रमण कर हिंदू धर्म को विश्व के उच्चासन पर बिठाया। वे सफल वक्ता थे। विश्व के कोने-कोने में भारत का मान और गौरव बढ़ाया। समस्त विश्व के लोगों की भलाई ही उनका धर्म था। अल्प आयु में ही 4 जुलाई 1902 में उनकी मृत्यु हो गई। केवल 39 वर्ष तक वे जीवित रहे। विश्व बंधुत्व की भावना उन्में कूट-कूटकर भरी थी।

No. 11, Gandhi Street, Virugambakkam, Chennai - 600092

कविता

जीवन

- अनिल कुमार झा

नहीं मरेगा रावण
तय है।
रक्षामः का लगता
भय है।
सुआ नीङ़ में सोया सोचे
राम कहाँ है
जिसको टेरूँ
नहीं और कुछ सीख सका अब
दृष्टिहीन हूँ
कैसे हेरूँ
चारों तरफ, नजर भर, घर घर
दिखता यहाँ
शिकारीमय है।
छोटी छोटी
चार दिवारी
जाने कल अब

किसकी बारी
भीषण शोर सुनाई देता
है खड़ी हवा
हो स्थिर, भारी
अपनी सोच करो कुछ बढ़कर
तभी मिलेगी
तेरी जय है।
नाच रहा नटुआ
रस्सी पर
रुके नहीं, बस खेल दिखाए
बाल सुलभ मन
उत्सुक, माँगे
मेले में हर वो, जो भाए
अभिभावक ने मुट्ठी खोली
रिक्त मिली
यह जीवन लय है।

'Anurag', Srikanth Road, Belavgan, Devagar - 814142 (Jarkhand)

वंडर बलून

मूल : तमिल कहानी - आर. राज्यलक्ष्मी

अनुवाद - अलमेलु कृष्णन

मैं दूसरी कक्षा में था। मेरे घर पर मम्मी और पापा थे। इनके अलावा मेरे पिता की बुआ भी थीं। अगर मैं उन्हें 'दादी' कहूँ तो वे नाराज हो जाती थीं और 'बुआ' बुलाने पर खुश हो जाती थीं।

रविवार के दिन हम तीनों सुस्ती से घूमते। बुआ नहाने के बाद 'भज गोविंदम' गाती थीं। जब तक हम नहाने नहीं जाते, तब तक वह हमें यह कहते हुए भगाती रहती, 'तुम वहाँ क्यों खड़े हो, आलसी लोग, जाओ नहा लो?' हम उनकी दृष्टि से बचते रहते। पिताजी पौधों की देखभाल करते रहते थे। मैं लट्टू की कील तेज करता रहता। मम्मी अखबारवाले की राह देखती रहती।

एक बार मैंने पापा से पूछा, 'पापा ! क्या मम्मी दुनिया की खबरें पढ़ेंगी?' क्योंकि, रोज की खबरें पढ़कर हमारे स्कूल के सामनेवाले ब्लैक बोर्ड पर कुछ महत्वपूर्ण खबरें लिखनेवाली बड़ी कक्षा की दीदियों को मैंने देखा है।

पापा ने समझाया 'ऐसा नहीं है बाबू, मम्मी प्रश्नोत्तरी की सनकी है; अखबार में ज्ञान से जुड़े कुछ पहेली प्रतियोगिता होगी। वह उसे पढ़कर उत्तर खोजती है। हालाँकि, उसने कभी पुरस्कार राशि नहीं जीता है, लेकिन वह हार नहीं मानती। भले ही तुम जैसे लट्टू की कील तेज नहीं कर सकती, परन्तु टीवी में प्रसारित प्रश्नोत्तरी कार्यक्रम जरूर देखती।'

एक दिन ब्लैक एंड व्हाइट टीवी सेट पर प्रश्नोत्तरी कार्यक्रम चल रहा था तो मम्मी हमें तुरंत जवाब बोलती जा रही थीं। सही जवाब होने पर वे 'थम्स अप' दिखाती।

उस कार्यक्रम के बाद किसी एक चैनल पर एम. एस. सुब्बलक्ष्मी, डी. के. पट्टम्माळ, जी. एन. बालसुब्रमण्यम जैसे कुछ मशहूर संगीतकार का कार्यक्रम था। बुआ उसे देखना चाह रही थी। बार-बार पूछ रही थी कि संगीत कार्यक्रम कब आएगा?

मम्मी गुरसे में बोली, 'जब आना है तभी आएगा'; तुरन्त दोनों के बीच बहस शुरू हो गया।

मम्मी आँखों में आँसू लिए अंदर चली गई।

मैंने उन्हें हल्का करने के उद्देश्य से पूछा कि, 'मम्मी तुम स्कूल में प्रश्नोत्तरी कार्यक्रम में भाग लेती थी क्या?'

'हाँ, मैंने लगातार 3 वर्षों तक प्रश्नोत्तरी कार्यक्रम में भाग लिया और प्रथम पुरस्कार के रूप में पार्कर पेन प्राप्त किया।'

'वह कहाँ है मम्मी?'

'उसे मैंने इस बॉक्स में ही रखा था। पापा ने बड़ी मुश्किल से उसे खोलकर स्याही को नीचे गिरा

दिया और नोक भी तोड़ दी। वह नोक यहाँ कहीं नहीं मिलती, इसलिए वह अंदर ही है।

यह बात पापा के कान में पड़ी और उन्होंने तुरंत कहा, ‘तुमने कलम को ठीक से बंद किए बिना मेरी रेशम की धोती के पास रख दिया तो धोती पूरी तरह से बिगड़ गई।’

मम्मी ने कहा, ‘आपको इसे ठीक से धोना था।’

‘धोना कहाँ से? उसके पहले ही वह फटने लग गई’ – पापा ने पलट कर वार किया।

‘ओह, मेरे पिता की दी गई धोती इतनी खराब थी क्या? यह कुंभकोणम के तुकिली में ऑर्डर देकर खरीदी थी।’

अगर यह झगड़ा बहुत बढ़ जाय तो हमें दोपहर का भोजन नहीं मिलेगा, ऐसा सोचकर मैंने कहा, ‘चिंता मत कीजिए! मैं आप के लिए एक नई रेशम की धोती ले आऊँगा।’

पापा ने हँस कर छोड़ दिया।

प्रश्नोत्तरी कार्यक्रम शुरू हुआ। प्रश्नकर्ता के प्रश्नों का उत्तर मम्मी जब के तब देती आई।

लेकिन, इनकी एक भी उत्तर प्रश्नकर्ता के कानों पर नहीं पड़ी होगी। जब उसने पूछा कि, ‘जो हवा खाता है और हवा में उड़ता है, वह कौन’ तो मम्मी ने जोर से चिल्लाया ‘गुब्बारा’। इससे बुआ को गुस्सा आ गया। वे बोली, ‘खूब! क्या तुम छोटी बच्ची हो? इस तरह चिल्लाती हो।’

मम्मी के पास चाहे कोई भी काम हो, वे रविवार की खबरें पढ़े बिना, प्रश्नोत्तरी कार्यक्रम देखे बिना नहीं रह सकतीं। पापा उर गए और उन्हें डॉक्टर के पास ले गए। डॉक्टर ने कहा, ‘यह एक फोबिया है।’ मम्मी दवा लेने लगी।

ऐसे तैसे करके मैंने 8 वीं तक पढ़ाई पूरी कर ली। गाँव के स्कूल में सिर्फ आठवीं तक ही पढ़ सकते थे। 9 से 12 वीं तक पढ़ना है तो शहर के स्कूल जाना है। वहाँ छात्रावास भी है। मैंने वहाँ के स्कूल में पढ़ना शुरू किया। छात्रावास में कई दोस्त थे। लेकिन प्रश्नोत्तरी की जाल में कोई नहीं फँसा। हमने चेस, क्रिकेट जैसे खेलों पर फोकस किया।

इस बार जब मैं छुट्टी पर घर गया तो वहाँ बहुत कुछ बदल गया था। मम्मी अब सीरियल देखने लगी थीं। ‘बुआ गूगल जूम में ‘भज गोविंदम’ कार्यक्रम में भाग लेने लगी थीं। मैंने पापा से कहा, ‘मम्मी बहुत बदल गई हैं।’

‘यह उस मूषिक (चूहे) का काम है। मैंने गणेश जी से प्रार्थना की थी। क्या कहूँ मैं? तुम्हारे मामा ने अपनी बहन के लिए पौंगल साड़ी खरीदने 300 रुपये भेजे। ठीक उसी समय एक विज्ञापन पर मम्मी की नज़र पड़ी। 3 साबुन एक साथ खरीदने पर एक नंबर मिलेगा। इस प्रकार हर तीन साबुन के साथ एक नंबर आएगा। इसे जोड़ कर रखना है। यदि अपने पास की संख्या लकी ड्रा में मिलने पर, अलार्म घड़ी से

लेकर घर तक कुछ भी मिल सकता है। इसलिए तुम्हारी मम्मी ने 10 रुपये में 3 साबुन के दर से पूरे 300 रुपयों के लिए साबुन खरीदे। उन संख्या पर्चियों को एक डिब्बे में रखती और ईश्वर को प्रणाम करती। अचानक लकी झां में एक अलार्म घड़ी उपहार में मिल गया। मम्मी ने पूरे शहर में ढिंढोरा पीट दिया। फिर उसने घड़ी को ईश्वर के पास रख दी। कहीं से भागे आए एक चूहे ने उसे धक्का दे दिया। आज इसका मूल्य 100 रुपए भी नहीं होगा।

मम्मी को संतुष्ट करने के लिए मैंने दुकानदार से पूछताछ की कि घड़ी की मरम्मत कितने में होगी? उसने कहा 200 रुपये। इस घड़ी पर इतना पैसा खर्च करने का कोई मतलब नहीं ऐसा सोचकर मैं चुप रह गया। मम्मी को बहुत दुःख हुआ। तो मैंने कहा 'नवरात्रि के समय हम उसे कोलु (दक्षिण भारत में गुड़ियों एवं मूर्तियों का उत्सव प्रदर्शन) में रख देंगे। साथ ही एक छोटे से फलक पर यह घड़ी साबुन की लकी झां में मिली थी' ऐसा लिखकर रख देंगे। मम्मी ने मुझे गुस्से से देखा। मैंने उसकी अनदेखी कर दी पापा ने कहा।

'और वे सभी साबुन ?'

'उसका क्या कहना ! लगभग 10 रिश्तेदारों के घरों में, उपनयन, गृहप्रवेश, विवाह, कर्णठेदन, गोद भराई जैसे शुभ अवसरों पर हमने साबुन को गिफ्ट पेपर में लपेटकर भेट कर दिया।'

'क्या आपने उस पर 'द्वारा उपहार' लिखकर अपना नाम लिखा है?'

'नहीं।'

'अच्छा हुआ कि नाम नहीं लिखा। अगर वीडियो लेते, तो हम पकड़े जाते '

पापा बोले 'फिर भी, जब दूर के रिश्ते के चाचा की लड़की की शादी में गए, तो उन्होंने खुश होकर कहा, 'दूर के रिश्ते के होने पर भी आप आ गए। हम उपहार (साबुन) देकर आ गए, तो अगले दिन वे घर आए और बोले, 'बढ़िया उपहार लाए! क्या आपने सोचा कि हमें मालूम नहीं पड़ेगा? आपको लगता है कि हम इतने गंदे हैं? क्या आप हमें दिखा रहे हैं कि हम इतने काले हैं?' उनकी आवाज से पूरी गली घर के सामने जम गई। दो दिनों के अन्दर हमने घर बदल लिया। अब हम उस गली के रास्ते से जाने से भी कतराते हैं।'

मैंने कहा 'ठीक है, यहीं वंडर बलून है; मुझे नहीं लगता कि मम्मी ऐसा दोबारा करेंगी। आगे से मम्मी को सीरियल देखने दें, आप खाना बना दें और बर्तन मांजें।'

ठीक उसी समय दरवाजे पर आई मम्मी ने मुझे और पापा को बात करते हुए देखा और पूछा कि 'जी! इस धारावाहिक में..... वेश में आनेवाली अभिनेत्री कपास, रेशम, पूनम जैसी कौन सी टेक्स्चर की साड़ियाँ पहनती हैं। ठीक कहने पर उपहार मिलेगा जी, आप भी थोड़ा देखकर बतायें।'

पापा बेहोश होकर गिर गए।

F2, Shree Varsha, 34/35, Krishna Mathananthapuram, Mukalivakkam, Chennai - 600125

अनुवाद अभ्यास

अपनी मातृभाषा अथवा अंग्रेजी में अनुवाद कीजिए।

❖ आजकल भ्रष्टाचार समाज के प्रत्येक क्षेत्र में अपनी चरम सीमा पर है। हर दिन एक नया घोटाला खुलता है। और अखबार की खबर बन जाता है। परंतु उससे जुड़े सम्मानित नाम अपनी शक्तियों का गलत प्रयोग करते हैं और इससे पहले कि अपराधी दोषी सिद्ध हो, केस बन्द हो जाता है। भ्रष्टाचार मूलतः मनुष्यों में नैतिक मूल्यों का पतन है जिसने अन्ततः उस समाज को खराब कर दिया है जिसमें हम रहते हैं। धन ही उनका एकमात्र उद्देश्य बन गया है और वे इसके लिए अपनी आत्मा तक बेचने को तैयार हो जाते हैं। पुरातन मूल्यों की पुनः स्थापना करके, जल्द सफलता पाने के सभी रास्तों को न अपनाकर तथा सच्चे प्रतिभावान व्यक्तियों को अवसर प्रदान कर इस ज्वलंत मुद्दे को निपटाया जा सकता है।

❖ विदेशों में जाने के लिए उत्साह बढ़ता ही जा रहा है और दूसरे अनेक देशों में भारतीयों पर हुए हमलों के बावजूद इसमें जरा भी कमी नहीं आई है। कुछ लोग शीघ्र पैसा कमाने के लिए जाते हैं और कुछ बेहतर जीवन जीने के लिए। अधिकतर भारतीय जो अच्छी तरह पढ़े लिखे नहीं हैं वे निम्न श्रेणी की नौकरियों, जैसे- वेटर, ड्राइवर और दूसरे मजदूरी के कामों के लिए जाते हैं। वहाँ उनके साथ प्रायः बहुत असम्मानजनक व्यवहार किया जाता है। भारत बुद्धिमानों का देश है। हमारे सभी योग्य लोग विदेशों में हाथों-हाथ लिए जाते हैं। कोई भी आसानी से सोच सकता है कि यदि भारत की यही मानव शक्ति भारत की उन्नति के लिए काम करे तो अपार सफलता प्राप्त होगी। अब समय आ गया जब हमें अपनी खुद की चाहतों को तिलांजलि देनी चाहिए और प्रथमतः देश के नागरिकों की तरह सोचें और कार्य करें।

❖ खाद्य पदार्थों में मिलावट करना अर्थात् धोखा देना है। ज्यादा से ज्यादा पैसा कमाने के लिए लोगों के जीवन से खेला जा रहा है। धूल, अशुद्धियाँ, पत्थर के कणों आदि को खाने के सामान में मिलाते हैं जो उसके रंग, आकार और बनावट आदि से मिलते हों। इसके विशेष उदाहरण हैं दूध, मसाले, तेल और धी, दालें इत्यादि। लोगों को जहरीले और हानिकारक खाद्य पदार्थ देकर मूर्ख बनाया जा रहा है। खाद्य सामग्री खरीदते समय हमें बहुत सावधान रहना चाहिए।

❖ कठिन परिश्रम ही सफलता की चाबी है। बहुत से लोग कठिन परिश्रम से भागते हैं और अपने निकम्मेपन को छिपाने की कोशिश करते हैं। अपनी असफलता के लिए भाग्य को जिम्मेदार मानते हैं और खाली बैठने के लिए झूठे बहाने गढ़ते हैं। सफलता कठिन परिश्रम करने के लिए और नई ऊँचाइयों को छूने के लिए प्रोत्साहित करती है। असफलताएँ भी आती हैं लेकिन उन्हें भी सकारात्मक रूप से लेना चाहिए।

❖ भारत की विविधता अद्भुत है। इसे कोई भी देख सकता है और महसूस कर सकता है। यहाँ सभी तरह की संस्कृतियों को पालन करने वाले रहते हैं। विभिन्न भाषाएँ बोलते हैं। अनेक त्योहार मनाते हैं। फिर भी सभी एक तत्व से आपस में जुड़े हुए हैं और वह है 'भारतीयता'।

❖ ग्राम-सभाएँ एक सीमा तक स्वतंत्र थीं। आमदनी का मुख्य जरिया लगान था। माना जाता था कि ज़मीन पर लगाया जाने वाला कर, उत्पादन में राजा का हिस्सा है। उसका भुगतान, हमेशा तो नहीं पर अक्सर पैदावार की शक्ल में किया जाता था। यह कर उपज के छठे भाग के करीब होता था। यह सभ्यता मुख्य रूप से कृषि केंद्रित थी।

कविता

विस्थापन का दर्द!

- ईश्वर करुण

लौट चला बंजारा फिर से
चेन्नै की सड़कों-गलियों में
कलकत्ता की सड़कें नापी
पार्क स्ट्रीट का कोना-कोना
भावनृत्य की भाषा समझी
कवि रवीन्द्र का काव्य सलोना

झूम-झूम कर गाते देखा
बाउल को जग के छलियों में !
पटना में कुछ घटना देखी
राजनीति का रुतबा देखा
गंगा की लहरों पर तिरता
बालू वाला कुनबा देखा
अखबारों में खबरें देखीं

टक्कर हुआ महाबलियों में !
तमिलनाडु में सिद्ध पुलिस को
हिन्दी में बतिआते देखा
हिन्दी भाषी बंधुजनों को
निर्भय आते-जाते देखा

अफवाहों का दौर थम गया
नव सुगंध फिर है कलियों में !
पटना से भाया कलकत्ता
जब जब बंजारा आता है लाता है
कुछ मीठे सपने
यहाँ जिन्हें सच कर पाता है
विस्थापन का दर्द छुपाकर
हँसता है यह खिलखिलियों में !

Block B3, First Floor, B-114, Tulive Dakshin, 132, A.N. Elumalai Salai,
(Oil mill Road), Iyyappathangal, Chennai - 600056

दक्षिण में हिंदी की स्थिति

- डॉ. वासुदेवन शेष

सृष्टि के प्रत्येक जीव की अपनी वाणी है और अपनी भावनाएँ हैं। जब भावनाओं का ज्वार फूटता है तो वाणी से शब्दों का प्रवाह फूट निकलता है। सृष्टि के सभी जीवों में मानव श्रेष्ठ जीव है। उसने अपनी बुद्धि का श्रेष्ठ प्रयोग करते हुए शाब्दिक भाषा का विकास किया। इस प्रकार भाषा प्रतीकात्मकता से विकसित होते हुए मौखिक, लिखित, ब्रेल तक आ पहुँची। संस्कृत से जन्मी भारत की सभी भाषाएँ बहनें हैं किन्तु जिस भाषा को राजभाषा और राष्ट्रभाषा का पद दिया गया, उसका सम्मान करना हर भारतवासी का कर्तव्य होना चाहिए क्योंकि कोई एक भाषा अपने देश के गैरव का प्रतिनिधित्व करते हुए देश की सामासिक संस्कृति की संवाहिका बन सकती है और वह भाषा बनी हिंदी।

हिंदी मात्र दस राज्यों की भाषा नहीं अपितु हिंदी पूरे देश की भाषा है जिसे सिर्फ संपर्क भाषा कहना उचित नहीं। दक्षिण भारत के चारों प्रदेशों में हिंदी की स्थिति ठीक रही है। तमिलनाडु में हिंदी सदैव रही है, बस रूप बदलता रहा।

वर्ष 1918 में दक्षिण भारत हिंदी प्रचार सभा, मद्रास की स्थापना ने हिंदी प्रचार को हवा दी। दक्षिण में इस संस्था के योगदान को कभी भुलाया नहीं जा सकता। धीरे-धीरे सभा के चहुँमुखी विकास ने हिंदी के प्रचार-प्रसार के साथ-साथ स्नातकोत्तर व शोध के स्तर को उत्कृष्टता तक पहुँचा दिया। सभा व उच्च शिक्षा और शोध संस्थान द्वारा संचालित अनेकानेक पाठ्यक्रमों में विद्यार्थी पढ़ते हैं और कई विद्यार्थी नौकरी करते हुए भी विशेष रूप से हुए अनेक पाठ्यक्रमों में बड़े उत्साह व रुचि से प्रवेश लिया है। भारतीय भाषा-भाषी विद्यार्थी विशेष रूप से तमिलनाडु के हिंदी, अंग्रेजी व तमिल तीन भाषाओं की अच्छी जानकारी रखते हैं, अतः नौकरी के अनेक रास्ते उनके लिए खुले रहते हैं।

मार्च 1918 में हिंदी साहित्य सम्मेलन, प्रयाग का आठवाँ अधिवेशन इन्दौर (मध्यप्रदेश) में सम्पन्न हुआ। इस अधिवेशन में ही दक्षिण में हिंदी प्रचार की योजना बनी। यह आयोजन पूज्य महात्मा गांधी की अध्यक्षता में संपन्न हुआ। इस आयोजन में उत्तर के ही नहीं वरन् दक्षिण के नेताओं ने भी भाग लिया। इस अधिवेशन में उन्होंने यह प्रस्ताव पारित कराया कि दक्षिण में हिंदी प्रचार का काम प्रारम्भ करना चाहिए। इस प्रस्ताव के कार्यान्वयन के लिए हिंदी साहित्य सम्मेलन, प्रयाग के महामंत्री महर्षि पुरुषोत्तम दास टण्डन ने मद्रास में एक शाखा खोली। गांधी जी अपने कनिष्ठ पुत्र देवदास गांधी को हिंदी कक्षाएँ चलाने के लिए मद्रास भेजा। सम्मेलन के प्रतिनिधि के रूप में सत्यदेव परिव्राजक यहाँ आए। पहला वर्ग गोखले हॉल में खोला गया। उसकी अध्यक्षता सर सी. पी. रामारामामी अथर ने की। इस कार्यक्रम का उद्घाटन पं. शिवराम शर्मा, मल्लादि सीतारामांजनेयुलु, डॉ. एनीबेसंट ने किया। गांधी जी का आह्वान पाकर पं. हरिहर शर्मा, सीतारामांजनेयुलु हिंदी शिक्षा प्राप्त करने के लिए प्रयाग गए और एक वर्ष वहाँ शिक्षा प्राप्त की और मद्रास आकर हिंदी प्रचार में लग गए। हिंदी सीखने वालों की संख्या बढ़ी तो उत्तर भारत से प्रताप वाजपेयी

रामभरोसे श्रीवास्तव, रघुवरदयाल मिश्र, देवदूत विद्यार्थी, पं. रामानंद शर्मा आदि दक्षिण भारत के विविध केंद्रों में हिंदी प्रचार-प्रसार करने लगे। दक्षिण भारत हिंदी प्रचार सभा के अधीन सन् 1918 से लेकर सन् 1927 तक कुल 68 प्रचारकों ने विभिन्न केन्द्रों में कार्य किया। इसके अतिरिक्त अनेक स्वतंत्र प्रचारकों ने भी हिंदी प्रचार की श्रीवृद्धि में अपनी महत्वपूर्ण सेवाएँ समर्पित की।

प्रचार सभा की ओर से दक्षिण के सुप्रसिद्ध द्रविड नेता श्री रामास्वामी नायकर के घर पर तमिलनाडु का सर्वप्रथम हिंदी प्रचारक विद्यालय, ईरोड में सन् 1922 में खुला। इस हिंदी प्रचार विद्यालय का उद्घाटन पंडित मोतीलाल नेहरू ने किया।

दक्षिण भारत हिंदी प्रचार सभा को इस बात की आवश्यकता अनुभव हुई कि उत्साही नवयुवकों को हिंदी प्रचार की शिक्षा देने के लिए एक केन्द्रीय विद्यालय मद्रास में खोला जाए। नवबंर 1931 में केन्द्र हिंदी प्रचारक विद्यालय का निरीक्षण देश के प्रमुख विद्वानों व नेताओं- डॉ हर्डीकर, कमला देवी चट्टोपाध्याय, संपादिका सोफिया सेमजी, राहुल सांकृत्यायन, स्वामी प्रज्ञानपाद और बौद्ध भिक्षु आनंद (श्रीलंका) ने किया। सभा में हिंदी का प्रचार द्रुतगति से हुआ। आज हिंदी प्रचार एक जनप्रिय आंदोलन है और प्रचार सभा इस आंदोलन का मुख्य केन्द्र है। इस संस्था के कार्यकलापों में हिंदी प्रचारकों को तैयार करना एक प्रधान कार्य है। हिंदी प्रचारकों का कार्यक्षेत्र व्यापक और विस्तृत है। उसे समाज सेवा, शिक्षा, साहित्य, संस्कृति के लिए पुरजोर कार्य करना पड़ता है। हिंदी प्रचार का मूल उद्देश्य ही यही है।

जैसे-जैसे सभा के कार्य का विस्तार होता गया वैसे-वैसे कार्यालय के अतिरिक्त परीक्षा विभाग, साहित्य विभाग, प्रकाशन विभाग एवं मुद्रणालय खुले। सभा की परीक्षाओं के लिए आवश्यक पाठ्यपुस्तकें मुद्रणालय में ही छपने लगीं। सभा की मासिक मुख्य पत्रिका 'हिंदी प्रचार समाचार' में हर माह सभा में होने वाली गतिविधियों, परीक्षाप्रयोगी सामग्री और साहित्यिक लेख भी प्रकाशित किए जाने लगे। सभा की त्रैमासिक पत्रिका 'दक्षिण भारत' में साहित्य एवं संस्कृति संबंधी गंभीर एवं विचारोत्तेजक शोध लेख प्रकाशित होने लगे। ये लेख शोधार्थियों के लिए सहायक होते हैं। इन पत्रिकाओं से स्थानीय लेखकों को अपनी लेखन प्रतिभा को उजागर करने का अवसर मिलता है।

सभा के प्रकाशन विभाग का हिंदी प्रचार-प्रसार में अभूतपूर्व योगदान है। 'हिंदी स्वयं शिक्षक' के माध्यम से प्रादेशिक भाषाओं के द्वारा हिंदी का काफी प्रचार किया है और उसी प्रकार हिंदी द्वारा मलयालम, कन्नड़, तमिल और तेलुगु सीखने के लिए 'स्वयं शिक्षक' तैयार करना प्रकाशन विभाग का महत्वपूर्ण एवं सराहनीय प्रयास है। इससे न केवल हिंदीतर वरन् अन्य भाषी भी लाभावित हो रहे हैं। प्रकाशन विभाग आज तक सांस्कृतिक एवं साहित्यिक सौहार्द की दिशा में लगभग 600 से अधिक पुस्तकों का प्रकाशन किया है। हिंदी प्रचार सभा दक्षिण में हिंदी के प्रचार-प्रसार के लिए नियमित परीक्षाएँ आयोजित करती है। दक्षिण में हिंदी प्रचार सभा की शाखाएँ हैदराबाद, एरणाकुलम, कोच्चि, धारवाड़, तिरुच्चि, बंगलूरु तथा ऊटी में भी हैं।

सभा की उच्च शिक्षा और शोध संस्थान विश्वविद्यालय विभाग स्नातकोत्तर केन्द्र है जिसमें एम.ए., पीएच.डी, डी.लिट का पाठ्यक्रम समिलित है और हर वर्ष कई तादाद में विद्यार्थी उच्च शिक्षा और शोध संस्थान से शोध करते हैं। संस्थान में शोधार्थियों के लिए शोध संबंधी अद्यतन पुस्तकें 'राष्ट्रीय हिंदी अनुसंधान ग्रंथालय' में उपलब्ध हैं। साथ ही यहाँ अनुवाद और पत्रकारिता के डिप्लोमा पाठ्यक्रम भी हैं।

सभा अपनी चार प्रांतों की शाखाओं से संपूर्ण भारत को हिंदी के माध्यम से एक सूत्र में बाँधने के लिए महत्वपूर्ण योगदान दे रही है। सभा की विशेष शाखा श्रीलंका, नार्वे, नई दिल्ली में भी है। कहना न होगा कि सभा हर वर्ष हजारों विद्यार्थी खासकर हिंदीतर को अपने पाठ्यक्रमों के द्वारा स्कूली बच्चों एवं हिंदी प्रेमियों को हिंदी भाषा परीक्षाएँ आयोजित कर निपुण बनाया है। इस समय चेन्नै में लगभग 5000 हिंदी प्रचारक हैं जो यह काम बखूबी कर रहे हैं।

दक्षिण भारत से प्रकाशित होनेवाली साहित्यिक पत्र-पत्रिकाएँ भी हिंदी प्रचार में महत्ती भूमिका निभा रही हैं। राजस्थान पत्रिका (दैनिक समाचार पत्र), हिंदी हृदय, हिंदी विजन, साऊथ चक्र, दक्षिण की रौनक, पल्लव टाइम्स, आदान-प्रदान, सूर सौरभ, संग्रथन (केरल मासिक), मैसूर प्रचार समाचार (मैसूर), कर्नाटक महिला प्रचार समाचार (बैंगलूरु), भाषा पीयूष, आंध्र ज्योति (हैदराबाद), मिलाप समाचार पत्र (हैदराबाद), स्वर्वंति (हैदराबाद), बसव मार्ग (बैंगलूरु), शबरी शिक्षा समाचार (सेलम)। इनमें महत्वपूर्ण समाचार, पुस्तक समीक्षा, संतों के उपदेश, गुरुवाणी, बालोपयोगी कथाएँ, कहानियाँ और लघुकथाएँ भी प्रकाशित की जाती हैं। साथ ही साथ केंद्रीय सरकार के कार्यालयों में होने वाली हिंदी की कार्यशालाएँ, हिंदी दिवस की गतिविधियाँ एवं नगर राजभाषा कार्यान्वयन समिति द्वारा समय-समय पर आयोजित हिंदी संबंधित प्रतियोगिताएँ आदि का विवरण भी दिया जाता है। साथ ही कॉलेज, शैक्षणिक संस्थान में हिंदी संगोष्ठी, सम्मेलन, हिंदी प्रतियोगिता की जानकारी निरंतर दी जाती है। हिंदी की प्रतियोगिताओं में तमिल भाषी बड़ी तादाद में भाग लेते हैं और पुरस्कार भी प्राप्त करते हैं।

दक्षिण में हिंदी के प्रचार-प्रसार के लिए तमिल-हिंदी साहित्यकारों एवं लेखकों के योगदान को कभी भुलाया नहीं जा सकता। डॉ. बालशौरिरेड्डी, डॉ. सुब्रह्मण्यन विष्णुप्रिया, डॉ. पी.के.बालसुब्रमण्यम, डॉ. सुंदरम, डॉ. गोविंदराजन, डॉ. शौरिराजन, डॉ. भवानी अश्विनी कुमार, डॉ. वत्सला किरण, आर. एम.श्रीनिवासन, डॉ. एस. विजया, डॉ. वाई. रवि, डॉ. लोकनाथन, डॉ. वासुदेवन शेष, डॉ. पद्मावती, डॉ. ललिता राव, डॉ. संजय रामन, डॉ. सरस्वती, डॉ. जयशंकर बाबू आदि हिंदीतर भाषी हिंदी के प्रचार-प्रसार के लिए समर्पित हैं। इनके अतिरिक्त भारत भर में अनेक लोग हैं जो हिंदी के लिए कार्य कर रहे हैं।

यही कहा जा सकता है कि दक्षिण के चारों प्रांतों में से खासकर चेन्नै में हिंदी जन गण में लोकप्रिय हो गई है। उत्तर भारतीय लोग जो एक समय यहाँ आने से झिझकते थे आज यहाँ आसानी से रोजगार प्राप्त कर रहे हैं। उनके बच्चे भी स्कूलों, कॉलेजों में हिंदी पढ़ रहे हैं। आईटी कंपनी में कार्यरत कर्मचारी दिल्ली, कलकत्ता, बिहार से आकर यहाँ कार्य कर रहे हैं। भाषा एक सामाजिक साधन है, विचारों के

आदान-प्रदान के लिए सशक्त माध्यम है। उसका प्रधान उद्देश्य विचारों का आपसी आदान-प्रदान है। भाषा का उद्देश्य न समझने के कारण ही आज हमारे देश में भाषायी विवाद खड़े हो रहे हैं। ये वाद भारत की एकता में समस्त देश को एक सूत्र में बाँधने के कार्य में कतिपय अङ्गचर्णों उपस्थित कर रहे हैं। दक्षिण भारत हिंदी प्रचार सभा एवं अन्य सहयोगी संस्थाओं की राष्ट्रीय सेवा से ये वाद विवाद पर्याप्त मात्रा में दूर हो रहे हैं। हिंदी के उद्भव और विकास में भारत के सब क्षेत्रों का योगदान रहा है। दक्षिणी हिंदी इस तथ्य का जीता जागता प्रमाण है। हिंदी में जो लचीलापन है वह काफी सराहनीय है। वह समय की माँग के अनुरूप अपने आप को परिवर्तित करती हुई आज विश्व की भाषा बनने की दिशा में अग्रसर हो रही है। यह कहना अनुपयुक्त नहीं होगा कि हर प्रकार की अभिव्यक्ति की क्षमता हिंदी में है। हिंदी हमारे देश की आन-बान-शान है।

53, Irusappa Street, Triplicane, Chennai - 600005

बूझो तो जानो

वर्ग पहेली

सूर्य के निम्नलिखित पर्यायों को वर्ग पहेली में ढूँढ़िए -

अंशुमान, अरुण, अर्क, आक, आदित्य, आफताब, कमलबंधु, दिनकर, दिनमणि,
दिनेश्वर, दिवाकर, प्रभाकर, भानु, भास्कर, भास्वर, मंदार, मरीचि, मार्तड, मिहिर,
रवि, विभाकर, सविता, सहस्रकार, सूरज, सूर्य

दि	न	क	र	र	आ	दि	त्य	मा	ल	य	अं
वा	ओ	आ	स्क	वि	फ	ए	उ	र्ता	इ	शु	व
क	च	भा	नु	औ	ता	छ	भा	ड	म	ट	ष
र	दा	मं	प	ऐ	ब	स्व	अं	न	ख	री	ह
ऊ	वि	दि	ने	श्य	र	क	स्र	ह	स	प्र	चि
प्र	भा	क	र	ई	अ	हि	सु	भा	वि	क	ट
र्य	क	म	ल	बं	धु	रि	मि	ठ	ता	था	र्क
सू	र	ज	अ	रु	ण	अ	दि	न	म	णि	अ

- 'हिंदी प्रचार समाचार' डेस्क

पथ्य और परहेज

डॉ. दिलीप धींग

पिछले कुछ सालों से उसने अनेक जप-तप किए। लेकिन अटका हुआ काम लटका ही रहा। वह जप-तप की राह सुझाने वाले मुनि के पास गया। मुनि ने विचार किया कि उनका सुझाया जप-तप निष्फल नहीं हो सकता, फिर कमी कहाँ है? मुनि ने कुछ सोचकर पूछा, तुम्हारे माता-पिता कहाँ हैं? माता-पिता के श्रम और आशीर्वाद से 'शिक्षित' होकर नगर में रहने वाला बेटा बोला माता-पिता के बारे में बात मत कीजिए। वे तो गमड़ेल हैं। दक्षयानूसी विचारों के हैं। उन्होंने हमारे साथ बहुत अन्याय किया है।

उसकी बात के समर्थन में उसकी पत्नी प्रमाण देने लगी तो संत ने संकेत से ही रोक लिया। संत को अपनी दी हुई साधना के व्यर्थ होने का एक सूत्र हाथ लग गया था। संत ने कहा, सुपथ्य के साथ सुपथ और वांछित परहेज भी जरूरी है। वह खुद पर खिन्न हुआ। संत को प्रणाम करके अपने गाँव गया। माता-पिता से माफी माँगी। अकेले माता-पिता को शहर में ले आया। इस बार दीपावली पर कुछ अधिक परिचित उसके घर आए। माता-पिता घर पर जो थे। उनकी उपस्थिति में बड़ी उमर के कमाऊ पोते का रिश्ता तय हो गया। बरसों से अटका काम हो गया। दिवाली की खुशियाँ बढ़ गईं।

7, Ayya Mudali Street, 1st Floor, Sowcarpet, Chennai - 600 001

पाठकीय

ज्ञानवर्धक एवं मनोरंजक

- डॉ. मीना कुमारी सिंह



केंद्र सभा द्वारा प्रकाशित पत्रिका 'हिंदी प्रचार समाचार' अप्रैल 2023 के अंक को पढ़कर मन प्रफुल्लित हो उठा। संपादकीय लेख के माध्यम से राष्ट्रभाषा हिंदी संबंधी भ्रांतियों को दूर करने का प्रयास सराहनीय है। 'स्त्री विमर्श आज और कल' एक सारगर्भित आलेख है। भाषा की प्रौढ़ता तथा विषय की गहनता ने इस लेख को उच्च स्तरीय बना दिया है। इतिहास के पत्रों को वर्तमान परिवेश के साथ जोड़कर, पूरब-पश्चिम के विस्तृत साहित्यिक फलक पर लिखा यह लेख ज्ञानप्रद है। गीतों के माध्यम से हिंदी शिक्षण का विषय प्रतिपादन मनोरंजक एवं आकर्षक है। डॉ. लोकनाथन ने तमिल-हिंदी अनुवाद की वास्तविक कठिनाइयों का उजागर करते हुए सामाजिक भाषा-विज्ञान के कई परतों को खोलकर अनुवादकों का मार्ग प्रशस्त किया है। वर्ग पहले की पहल भी अनूठी है। इस अंक में पत्रिका का कलेवर मनोरंजक लगा। सभा और पत्रिका के सतत प्रगति के लिए मंगलकामनाएँ।

73/31, Kumara Koil Middle Street, Kallidai Kurichi, Tirunelveli - 627416 (TN)

सुशीला

- बी. जयलक्ष्मी

सुशीला शिवराम की पत्नी थी। वह बहुत ही भोली-भाली थी। कोई भी उसे आसानी से बेवकूफ़ बना सकता था। अपनी पत्नी के स्वभाव से शिवराम जी चिंतित थे। कोई भी बात एक बार समझाने से समझ नहीं पाती थी। तीन-चार बार कहने पर ही समझ पाती थी। इधर शिवराम जी 30.11.2022 को सरकारी नौकरी से सेवानिवृत्त हुए। उनको पी.एफ, ग्राचुविटि, कम्प्यूटेशन, अर्जित छुट्टी एनकाशमेन्ट क्रेडिट, कोऑपरेटिव सोसाईटी का रकम आदि के चेक मिले। शिवराम जी सब कुछ स्टेट बैंक के अपने अकउंट में जमा करके खुशी से घर लौटे। कुल मिलाकर करीब पचास लाख रुपये जमा किए।

घर लौटकर अपनी पत्नी से यह सब बातें तीन-चार बार बतायीं। पत्नी अब समझ गई कि हम अमीर हो गए हैं। पति ने पत्नी को समझाया कि किसी भी रिश्तेदार से 'कितना पैसा मिला' यह बात नहीं बताना। क्योंकि ऐसे बहुत रिश्तेदार हैं जो कोई बहाना बनाकर रुपये माँग लेंगे। उनसे कहना कि मकान लोन, कार लोन, पी.एफ लोन, सोसाईटी लोन आदि चुकाने के बाद बहुत कम रकम ही मिला है। अब तो वेतन से नहीं, मात्र पेंशन से गुजारा करना है। इसलिए किसी को कोई मदद नहीं कर सकते। पत्नी भी समझ गई। तीन दिन के बाद पत्नी को लेकर बैंक गए और जॉइन्ट अकाउंट खोल दिया। पत्नी को ए.टी.एम. कार्ड दिलवाया। बैंक में कहा गया कि तीन दिन के अंदर पिन नंबर भेजा जाएगा और उसके बाद पैसा निकाल सकते हैं। शिवराम ने पत्नी को बताया कि जो रकम बैंक में जमा है, उसमें से आधा हिस्सा उनका है और बाकी आधा पत्नी का। उसने पत्नी से कहा- लेकिन घर बहुत होशियारी से, किफायत से चलाना कि इमरजेंसी में ही पैसा निकालना। पत्नी 'हाँ' कहकर घर के काम में लग गई।

पिन नंबर आ गया और सुशीला बहुत खुश हुई। शिवराम कहीं बाहर गए थे कि अचानक फोन कॉल आया। एक आदमी ने बताया कि बैंक से फोन कर रहा हूँ। पिन नंबर आ गया कि नहीं, यही पूछने फोन कर रहा हूँ। उन्होंने ए.टी.एम. कार्ड का नंबर और पिन नंबर वेरिफिकेशन के लिए माँगा तो सुशीला ने ए.टी.एम. कार्ड का नंबर तुरंत बता दिया। उस आदमी ने कहा कि इस नंबर के पिन में कुछ गलती हो गई। आप अपना नंबर बताइए ताकि मैं इस गलती को सुधार सकूँ। सुशीला पिन नंबरवाला कागज लेकर बतानेवाली ही थी कि उसे याद आई कि उसके पति ने उसे आधा हिस्सा ही लेने को कहा है; इसलिए पिन नंबर 4826 का आधा 2413 बना दी। वह आदमी बार-बार कह रहा था कि यह गलत है; अच्छी तरह देखकर बताइए। पर सुशीला माननेवाली नहीं थी। फोन कट गया और वह चिंतित हुई। इतने में पतिदेव आ ही गए। सुशीला ने फोन के बारे में बताया तो शिवराम का चेहरा उतर गया। उसने सोचा कि इसने सही नंबर बताया होगा, मेरा पूरा पैसा गया! उसने सुशीला से पूछा कि तुम ने सही नंबर बता दिया कि नहीं। सुशीला ने गर्व से कहा- जब पैसा का आधा हिस्सा ही मेरा है तो मैं क्यों पूरा नंबर बताऊँ? मैंने पिन नंबर का आधा 2413 ही बताया। अब शिवराम को आश्वासन हुआ कि पत्नी ने होशियारी से सही नंबर नहीं बताया, नहीं तो, उसका पूरा पैसा झट से निकल जाता। उसने पत्नी को शाबाशी दी।

C/926, HIG, Eri Scheme, 7th Street, Mogappair West, Chennai - 600037

बाहर से कोई अंदर न आ सके
 अंदर से कोई बाहर न जा सके
 सोचो कभी ऐसा हो तो क्या हो
 हम तुम
 एक कमरे में बंद हों
 और चाबी खो जाए
 तेरे नैनों की भूल भुलैए में बॉबी खो जाए
 आगे हो घनघोर अँधेरा
 बाबा मुझे डर लगता है
 पीछे कोई डाकू लुटेरा
 -ँ, क्यों डरा रहे हो
 आगे हो घनघोर अँधेरा
 पीछे कोई डाकू लुटेरा
 ऊपर भी जाना हो मुश्किल
 नीचे भी आना हो मुश्किल
 सोचो कभी ऐसा हो तो क्या हो
 हम तुम कहीं को जा रहे हों
 और रस्ता भूल जाए
 तेरे बैय्या के झूले में सत्या
 बॉबी झूल जाए
 हम तुम....

बरस्ती से दूर परबत के पीछे
 मरस्ती में चूर घने पेड़ों के नीचे
 अनन्देखी अनजानी सी जगह हो
 बस एक हम हो और दूजी हवा हो
 सोचो कभी ऐसा हो तो क्या हो
 हम तुम एक जंगल से गुजरे
 और शेर आ जाए
 शेर से कहूँ तुमको छोड़ के
 मुझे खा जाए
 हम तुम....
 ऐसे क्यों खोए हुए हो
 जागे हो कि सोए हुए हो
 क्या होगा कल किसको खबर है
 थोड़ा सा मेरे दिल में ये डर है
 सोचो कभी ऐसा हो तो क्या हो
 हम तुम, यूँ ही हँस खेल रहे हों
 और आँख भर आए
 तेरे सर की कसम तेरे गम से
 बॉबी मर जाए
 हम तुम....

(बॉबी फिल्म)

भाषा प्रयोग

विलोम शब्द

उल्टा अथवा विपरीत अर्थ देने वाले शब्दों को विलोम शब्द कहा जाता है। इन्हें विपरीतार्थक अथवा विरुद्धार्थी शब्द भी कहा जाता है। उपर्युक्त गाने में प्रयुक्त विलोम शब्दों को देखेंगे -

➤ बाहर से कोई अंदर न आ सके - इस वाक्य में बाहर और अंदर एक दूसरे के विलोम हैं।

- **ऊपर भी जाना** हो मुश्किल, **नीचे भी आना** हो मुश्किल - इन वाक्यों में ऊपर और नीचे तथा जाना और आना विलोम हैं।
- **जागे हो कि सोए हुए हो** - इस वाक्य में जागना और सोना विलोम हैं।

संज्ञा शब्द : किसी व्यक्ति, प्राणी, वस्तु, स्थान, भाव आदि के नाम के स्वरूप में प्रयुक्त होने वाले शब्द संज्ञा कहलाते हैं। उपर्युक्त गाने में प्रयुक्त संज्ञा शब्दों की सूची इस प्रकार है - बॉबी, कमरे, चाबी, डाकू, लुटेरा, बस्ती, परबत, पेड़, जंगल, शेर, आँख

क्रिया शब्द : जिन शब्दों से काम होने का बोध हो उन्हें क्रिया शब्द कहते हैं। इस गीत में कुछ क्रिया शब्दों को देख सकते हैं और साथ ही विविध प्रयोग भी सीखेंगे -

आना, जाना, खोना > खो जाना, खाना > खा जाना, डरना > डर जाना, बंद होना > बंद हो जाना, झूलना > झूल जाना, भूलना > भूल जाना, लूटना > लूट लेना, सोचना > सोच लेना, गुजरना > गुजर जाना, छोड़ना > छोड़ जाना, हँसना > हँस लेना, खेलना, जागना, सोना > सो जाना, मरना > मर जाना मारना > मारा जाना

पुनरावृत्ति : यदि किसी बात पर बल देना हो तो किसी बात को बार-बार दोहराया जाता है। इसे ही पुनरावृत्ति कहते हैं। इस गीत में यह इंगित किया गया है कि ऐसा होगा तो क्या होगा। अतः सोचने के लिए बार-बार सूचित किया जा रहा है- 'सोचो कभी ऐसा हो तो क्या हो' - इस पंक्ति को दोहराया गया है। इससे हमारी कल्पना शक्ति जागृत हो सकती है और हमारे आँखों के सामने बिंब या दृश्य आ सकता है।

बिंब : पूरे गीत में चाक्षुष बिंब है।

- कमरे में बंद होने और चाबी खो जाने के बाद की स्थिति
- घनघोर अँधेरे में डाकू और लुटेरे आ जाए तो
- कहीं जाते समय रास्ता भूल जाना
- अनदेखी और अनजानी जगह में अकेले हो तो
- भूल भूलैये में खो जाए तो
- जंगल से गुजरते वक्त शेर आ जाए तो
- कल क्या होगा किसको खबर है, अनहोनी हो जाए तो

इन बिंबों के माध्यम से अंतर कथाओं का निर्माण भी किया जा सकता है।

नोट : प्रिय पाठक आप इन बिंबों के माध्यम से एक छोटी सी कहानी बना कर भेजिए।

Co-Editor, Hindi Prachar Samachar, DBHPS, Madras - 600017

सुमित्रानन्दन पंत

- महादेवी वर्मा

सुभद्रा जी के उपरान्त मेरे दूसरे परिचित कविबन्धु सुमित्रानन्दन जी ही हैं; परन्तु उनसे परिचय की कथा इतनी विचित्र है कि उनके स्मरण-मात्र से हँसी आती है। छायावाद के प्रभात का जब प्रथम आलोक प्रहर व्यतीत हो रहा था तब तक मैं :

‘पंकज के पोंछि नैन आयो सुखदैन जानि,
अंजन पराग को समीर सीत नाये देत।’

जैसी समस्यापूर्ति बड़ी तन्मयता से कर रही थी। मेरी स्थिति बहुत कुछ उस पक्षि-शावक के समान रही होगी, जिसे प्रत्येक क्षण बढ़ने वाले अपने पंखों का स्वयं पता नहीं चलता। जब एक दिन अचानक नीङ़ से झाँकते-झाँकते गिर कर वह धरती पर आने के स्थान में सर से उड़ता हुआ ऊँची डाल पर बैठ जाता है, तब उसे पहले-पहले इस परिवर्तन की अनुभूति होती है। समस्यापूर्ति में तो मैं बचपन में ही ठोक-पीटकर वैद्यराज बना दी गई थी। खड़ी बोली की तुकबन्दी मुझे वातावरण से अनायास प्राप्त हो गई; पर दोनों से भिन्न जो एक भाव जगत् मेरे भीतर रेखा-रेखा करके बन रहा था, उसके प्रति तब तक न मेरी जिज्ञासा थी न बोध।

मैं लिखती हूँ, यह सम्भवतः कोई न जान पाता यदि सुभद्रा जी ने पता न लगा लिया होता और उनको पता चल जाने के उपरान्त किसी से भी छिपाना सम्भव नहीं था। उस समय प्रयाग में क्रौस्थवेट गर्ल्स कॉलेज का विशेष महत्त्व था। यदि किसी छात्रा को परीक्षा में उच्च स्थान मिलता, तो उसका क्रौस्थवेट की विद्यार्थिनी होना स्वाभाविक था। यदि कोई वाद-विवाद की प्रतियोगिता में विशेष स्थान पाती, तो उसका क्रौस्थवेट में होना अनिवार्य था। यदि कोई कवि सम्मेलन में पुरस्कार प्राप्त करती, तो उसका भी क्रौस्थवेट से सम्बद्ध होना आवश्यक था।

संरथा के मंत्री स्व. श्री जसवंतराय जी के निश्छल वात्सल्य से स्निग्ध और आचार्या कृष्णा बाई तुलास्कर के सात्त्विक तप से उज्ज्वल वातावरण ने हम सबको विशालतम परिवार का सम्भाव और लघु-तम की देख-रेख एक साथ दे डाली थी। जिसमें जो गुण-अवगुण था, वह न उपेक्षित रह पाता था न अनदेखा। ऐसे वातावरण में जब सुभद्रा जी ने मेरी तुकबन्दी रचने की विशेषता की घोषणा कर दी तब उनके जाने के उपरान्त कवि-सम्मेलनों में सम्मिलित होने का भार अयाचित मेरे सिर आ पड़ा। और सत्य तो यह है कि यह भार तब मुझे दुर्वह भी नहीं लगता था। मैं पढ़ने में अच्छी थी और मुझे परीक्षा में अच्छा स्थान और छात्रवृत्ति मिलती रही, पर पाठ्य-पुस्तकों के प्रति मेरा घोर विराग ही रहता था।

इंटर तक पहुँच जाने पर भी परीक्षा के दिनों में मुझे पुस्तकों के साथ बाँध रखने के लिए आचार्या सुधालता को प्रलोभन देना पड़ता था कि तीन घंटे बैठकर पढ़ने के बाद आइसक्रीम मिलेगी। ग्रीष्म की उस दोपहर के सुनसान में मेरी दृष्टि पुस्तक के पृष्ठ और घड़ी की सुई के बीच में दौड़ लगाती रहती थी और

चार के अंक पर सुई के पहुँचते ही वे मुझे पुस्तकों के बंडल के साथ अपने दरवाजे पर पातीं और तब आइसक्रीम पाने के उपरान्त में प्रायः उस बंडल को दूसरे दिन के लिए वहीं सुरक्षित रख आती थी।

कभी-कभी इतने प्रयत्न से पढ़ा हुआ भी व्यर्थ हो जाता था, क्योंकि जब प्रथम प्रश्न-पत्र की तैयारी करके जाती तब द्वितीय सामने आ जाता और जब द्वितीय के लिए प्रस्तुत होती तब पता चलता तृतीय आने वाला है। ऐसी स्थिति में कवि सम्मेलनों के प्रति मेरा विशेष अनुराग स्वाभाविक हो गया तो आश्चर्य नहीं। ऐसे कवि सम्मेलन प्रायः छात्रावासों या शिक्षा संस्थाओं के तत्त्वावधान में किसी वयोवृद्ध कवि की अध्यक्षता में आयोजित होते थे और उनमें पूर्व निश्चित समस्याओं की पूर्तियाँ और पर-रचित कविताएँ सुनाई जाती थीं। उत्तम पूर्तियाँ और रचनाओं को विशेष पदक और पुस्तकों से पुरस्कृत किया जाता था।

हिन्दू बोर्डिंग हाउस में श्री हरिओध जी की अध्यक्षता में आयोजित ऐसे ही एक कवि सम्मेलन में हम लोग आहूत थे। मैंने निर्दिष्ट समस्याओं की पूर्ति भी की थी और निश्चित विषयों पर कविताएँ भी लिखी थीं। उस समय तक मैं कई पदक प्राप्त कर चुकी थी, अतः बहुत गम्भीर मुद्रा बनाकर कुछ सहयोगिनी छात्राओं और अध्यापिकाओं के साथ मंच के एक ओर समासीन थी। अचानक दूसरी ओर बैठे हुए छात्रों और अध्यापकों के धनुषाकार समूह में कुछ हलचल सी उत्पन्न करती हुई एक कोमलकान्त कृशांगी मूर्ति आविर्भूत हुई। आकण्ठ अवगुणित करती हुई हल्की पीताभ-सी चादर, कंधों पर लहराते हुए कुछ सुनहले से केश, तीखे नक्श और गौरवर्ण के समीप पहुँचा हुआ गेहुंआ रंग, सरल दृष्टि की सीमा बनाने के लिए लिखी हुई-सी भवें, खिचे हुए-से औंठ, कोमल पतली उंगलियों वाले सुकुमार हाथ... यह सब देखकर मुझे ही नहीं, मेरी अन्य संगिनियों को भी भ्रम होना स्वभाविक था। पर हम सब यह देखकर विस्मित हो गए कि वह मूर्ति हमारी ओर न आकर उन्हीं के बीच में प्रतिष्ठित हो गई जो उससे आकार-प्रकार में उतने ही भिन्न जान पड़ते थे जितने क्षीण तरल जल-रेखा से विशाल कठोर पाषाण खंड।

आठ बजे हमें अपने छात्रावास लौट जाना था, अतः मैं अपनी कविता सुना भर सकी, सुमित्रानन्दन जी की कविता सुनने का सुयोग उस दिन मुझे मिलते-मिलते रह गया। उन दिनों नवीन भव को नवीन शब्दावली में बाँधने वाली कुछ रचनाएँ श्री नन्दिनी के नाम से प्रकाशित हुई थीं। उन रचनाओं ने अनेक व्यक्तियों के मन में किसी विशेष प्रतिभा सम्पन्न नवीन कवियत्री के आगमन का विश्वास उत्पन्न कर दिया था। सम्भवतः सुभद्रा जी भी इस सम्बन्ध में अनजान थीं, अन्यथा मुझे इतने अधिक दिन भ्रम में न रहना पड़ता। अंत में कई वर्षों बाद डॉ. धीरेन्द्र वर्मा ने अपने विवाह के अवसर पर मुझसे अपने कवि मित्र सुमित्रानन्दन जी का परिचय कराया तब मुझे अपने भ्रम पर इतनी हँसी आई कि मैं शिष्टाचार के प्रदर्शन के लिए भी वहाँ खड़ी न रह सकी।

सुमित्रानन्दन जी हिमालय के पुत्र हैं, पर उन्हें देखकर न उन्नत हिम-शिखरों का स्मरण आता है और न ऊँचे चिर सजग प्रहरी जैसे देवदारु याद आते हैं। न सभीत करने वाले गहरे गर्त की ओर ध्यान जाता है और न उच्छृंखल गर्जन भरे निर्झर स्मृति में उदित होते हैं। वे उस प्रशांत छोटी झील से समानता रखते हैं

जो अपने चारों ओर खड़े शिखरों और देवदारुओं की गगनचुम्बी ऊँचाई को अपने हृदय में प्रतिबिम्बित कर उसे धरती के बराबर कर देती है, गहरे गर्तों को अपने जल से सम कर देती है और उच्छृंखल निर्झर के पैरों के नीचे तरल और आँचल बिछाकर उसे गिरने, चोट खाने से बचा लेती है।

उनका जन्मस्थान कौसानी मानो कूर्मांचल का सुन्दर हृदय है। वहाँ हिम श्रेणियाँ, रजत वर्णमाला में लिखे सौन्दर्य के उज्ज्वल पृष्ठ के समान खुली रहती हैं। उस कत्यूर घाटी के बीच में खड़े होकर जब हम एक ओर हिमदुकूलिनी चोटियों को और दूसरी ओर चीड़ देवदारुओं की हरीतिमा से अवगुंठित कौसानी देखते हैं तब हमें ऐसा जान पड़ता है मानो हिम-शिखरों की उज्ज्वल रेखाओं ने कौसानी के सौन्दर्य की कथा लिखी है और कौसानी ने अपने मरकत अंचल में हिमानी का छंद आँका है। ऐसे ही प्रकृति के उज्ज्वल हरित अंचल में सुमित्रानन्दन जी ने जब आँखें खोलीं तब उनकी जन्मात्री की पलकें चिरनिद्रा में मुंद चुकी थीं। भाइयों में छोटे होने के कारण और जन्म के साथ मातृहीन हो जाने के कारण उन्हें सबसे प्यार-दुलार पाने का अधिकार मिल गया। पर पौधे के स्वस्थ विकास के लिए आवश्यक धरती के समान ही जीवन के स्वाभाविक विकास के लिए माता की स्थिति है। उसके अभाव में दूसरों से जो स्नेह प्राप्त होता है उनमें 'अरे बेचारा मातृहीन है' का भाव अनजाने ही घुल-मिल जाता है। और यह दया भाव दूध में काँजी के समान स्नेह का स्वाद ही दूसरा कर देता है, क्योंकि स्नेह सब कुछ सह सकता है, केवल दया का भार नहीं सह सकता। ऐसे स्नेह पर पलने वाले बालक बड़े होकर सबसे अधिक सहदय हो सकते हैं, परंतु सबसे अधिक अस्वाभाविकता भी उन्हीं के पल्ले पड़ती है।

सुमित्रानन्दन जी के मन का संकोच, उनकी अंतर्मुखी वृत्तियाँ सब उनके असाधारण बालकपन की उपज हैं। पर्वत के एकान्त की कल्पना सहज है, पर वह एकांत कितना मुखर हो सकता है इसका अनुमान बिना वहाँ रहे सम्भव नहीं है। उस पर यदि व्यक्ति के मन का तुमुल कोलाहल कुछ क्षणों के लिए शान्त हो सके तो यह मुखरता अपनी शब्दरहित भाषा में ही जीवन के गम्भीरतम रहस्य समझा देती है। हिमालय की उपत्यकाओं में जहाँ-तहाँ घरोंदे जैसे घर बना कर बसा हुआ मानव, प्रकृति की विराटता के सामने छोटा लगने लगता है। फिर वहाँ नगर के समान एक स्थान पर जन-समुद्र भी नहीं मिल सकता और जो जन हैं वे अपनी व्यस्तता में ही खो जाते हैं। बाहर के आने वाले झोंके तक उन ऊँची-ऊँची प्राचीरों से टकराते-टकराते कभी किसी कोने तक पहुँच पाते हैं और कभी टूट कर कहीं बिखर जाते हैं।

आश्चर्य नहीं कि किशोर कवि प्रकृति के साथ ही दुकेला रहा। उसे झरनों-नदियों में लास दिखाई दिया, पक्षियों-भ्रमरों में संगीत सुनाई दिया, फलों-कलियों में हँसी की अनुभूति हुई, प्रभात का सोना मिला, रात में रजतराशि प्राप्त हुई, पर कदाचित् हँसने रोने वाला हृदय इस भूलभुलैया भरी चित्रशाला में खोया रहा। आँसू के खारे पानी में डुबाए बिना सौन्दर्य के चित्र रंग पक्के नहीं हो सकते, पर प्रकृति के पास सौन्दर्य हैं, आँसू नहीं।

सुमित्रानन्दन जी को स्वभाव और शरीर में असाधारण कोमलता मिली है, परंतु उसमें प्रकृति के

क्षतिपूर्ति सम्बन्धी नियम का अभाव नहीं है। स्वभाव को जीवन के अनेक चढ़ाव उतारों और सम-विषम परिस्थितियों से संघर्ष करना पड़ा है और शरीर को न जाने कितने रोगों से जूझना पड़ा है। पर जिस नियम से आज के वैज्ञानिक ने मकड़ी के कोमल झीने तन्तु में न टूटनेवाली दृढ़ता का पता लगा लिया है उसी नियम के अनुसार सुमित्रानंदन जी के सुकुमार शरीर और कोमल प्रकृति ने सब अग्नि परीक्षाएँ पार कर ली हैं। पर यदि परीक्षा के अन्त में परीक्षित वस्तु कुछ और बन जावे तो फिर उसका मूल्यांकन भी बदल जाता है। सुबर्ण परीक्षित होकर अधिक दीप्तिमय सुवर्ण ही रहे तभी उसकी परीक्षा उसे अधिक महार्घता दे सकती है। सुमित्रानंदन जी का स्वभाव आज भी कोमल है और शरीर आज भी सुकुमार है। अनुभवों ने इसु कोमलता और सुकुमारता पर एक आर्द्रता का पानी ही फेरा है। जिस प्रकार आकाश की ऊँचाई से गिरनेवाला जल किशलयों ओर फूलों पर स्वच्छता के अतिरिक्त और कोई चिह्न नहीं छोड़ता, उसी प्रकार संघर्षों ने उनके जीवन पर अपनी रुक्षता और कठोरता का इतिहास नहीं लिखा है।

जब वे तीसरी कक्षा के बाल-विद्यार्थी थे, तभी उन्हें अपने गोसाईदत्त नाम की कवित्वहीनता अखरने लगी। सुमित्रानंदन जैसा श्रुति-मधुर नाम अपने लिए खोज लेने वाली उनकी असाधारण बुद्धि ने जीवन और साहित्य के अनेक क्षेत्रों में अपनी सृजनशीलता का परिचय दिया है। वेश-भूषा रहन-सहन से लेकर सूक्ष्म-भाव और चिन्तन तक सब कुछ उनके स्पर्श मात्र से असाधारणता पाता रहा है। जीवन में प्रत्यक्ष पार्थिव से अव्यक्त सूक्ष्म तक ऐसा कुछ नहीं है जिसकी उपेक्षा से मनुष्य को सार तत्व प्राप्त हो सके। इस सिद्धान्त को जितनी पूर्ण कसोटी सुमित्रानन्दन जी के जीवन में मिली है, उतनी अन्यत्र नहीं।

बदलती हुई सम-विषम परिस्थितियों में उन्हें नूतन सृजन की संभावनाएँ इस प्रकार संचालित करती हैं कि वे संघर्ष को भूल जाते हैं। कॉलेज छोड़ने के किसी पूर्व निश्चय के बिना ही वे महात्मा गांधी की सभा में पहुँच गए। और यदि भाई देवीदत्त जी की सूचना पर विश्वास किया जाय तो मानना होगा कि उन्होंने ही पीछे से इनकी कुहनी थाम कर इनका हाथ ऊँचा कर दिया। पर इन्हें वह परिवर्तन भी आमन्त्रण भरा लगा जिसमें नौकरी-चाकरी, ऊँचे पद आदि की कोई रेखा नहीं थी, केवल एक शून्य पटपर लेखनी अंकित थी।

आर्थिक दृष्टि से संपन्नता की ऊँची सीढ़ी से विपन्नता की अन्तिम सीढ़ी तक उन्होंने अनेक चढ़ाव उतार देखे हैं। जिस अल्मोड़े में उनके कई मकान थे, वहीं किराये की छोटी कॉटेज में रहते हुए भी न उनकी हँसी मलिन हुई और न अभिमान आहत हुआ। वे किसी वीतराग दार्शनिक की तटस्थिता की साधना नहीं कर रहे थे, वरन् उनकी स्थिति उस बालक से समानता रखती थी जो अपने घरोंदे के बनाने में जितना आनन्द पाता है मिटाने में उससे कम नहीं। परिवार का ढाँचा टूट गया था। साहित्य से कोई विशेष आय नहीं थी। इन्हीं परिस्थितियों में वे कई वर्ष कालाकांकर में रहे। उनके क्षेत्र संन्यास का अर्थ समझने जाकर मैंने उन्हें जिस उत्साह भरी स्थिति में पाया उसने मेरे प्रश्न को उत्तर बना दिया। टीले पर बनी अपनी उस कुटी का नक्षत्र नाम रख कर वे किसी नवीन सृजन की दिशा अनुसन्धान करने में लगे हुए थे।

ग्रामीणों के कुतूहल और नागरिकों की हँसी सह कर भी अपने जिन केशों के हर घुमाव पर उनका

ध्यान रहता था, एक दिन उन्हीं को काट फेंकना भी उनके लिए सहज हो गया। लम्बी अलकों को काट-छाँटकर, हाफपैंट और कमीज में प्रसाधित, छड़ी की मूठ उँगलियों में दबाए जब वे मेरे यहाँ पहुँचे तब मुझे यह समझते देर नहीं लगी कि उन्हें कोई नया क्षितिज मिल गया है।

ग्राम्या, युगवाणी आदि में उन्होंने अपनी सद्यः प्राप्त यथार्थ-भूमि की सम्भावनाओं को स्वर-चित्रित करने का प्रयत्न किया है। आज फिर वे अपने लम्बे गंगा-यमुनी केशों को लहराते हुए चिर-परिचित कविरूप में उपस्थित हैं। इसका अर्थ है कि उनकी अनन्त सृजन सम्भावनाओं का कोई त्योहार निकट है। उनके लक्ष्य खोजी मन के निरन्तर शर-सन्धान से उनका सुकुमार शरीर थक जाता हो तो आश्चर्य नहीं। लम्बी अस्वस्थताएँ इसी ओर संकेत करती हैं। एक बार वे क्षय के सन्देह में बहुत दिनों तक स्व.डॉ. नीलाम्बर जोशी के पास भरतपुर में रहे। कई बार टाइफाइड से पीड़ित होकर जीवन-मृत्यु की सन्धि में पड़े रहे। पर उनके मन और शरीर दोनों ने अपनी-अपनी सीमा में जिस इस्पाती तत्व का परिचय दिया है वह पराजय नहीं मानता।

व्यवहार में वे अत्यंत शिष्ट, मधुरभाषी और विनोदी हैं। उनकी कोई बात किसी को किसी तरह की चोट न पहुँचा दे, इसका वे इतना ध्यान रखते हैं कि श्रोता सचमुच चोट की कल्पना करने लगे तो अस्वाभाविक न कहा जाएगा। कवि पुत्र, परिवार का सबसे बेकार अंग माना जाता है। सुमित्रानंदन जी ने कमाऊ सपूत बन कर सबके ललाट का लांछन धो डाला है। परिग्रह की दृष्टि से वे चिरकुमार सभा के आजीवन अध्यक्ष हो सकते हैं। आरम्भ में उनकी गृहस्थी के लिए परिस्थितियाँ बाधक रहीं और जब परिस्थितियों ने अनुकूलता दिखाई तब उनकी मानसिक सन्ततियों की अनन्तता ने उनका मार्ग रोक दिया। अच्छा है कि... घने लहरे रेशम के बाल/धरा हैं सिर पर मैंने देवि/तुम्हारा यह स्वर्गिक उपहार। कहकर ही उन्होंने अपनी भावीगृहिणी को मुक्ति दी। इस उदारता के लिए उन्हें, उस अलक्ष्य गृहिणी की ओर से सब महिलाओं को साधुवाद देना उचित है। जिसके पारे जैसे मन का साथ शरीर भी नहीं दे पाता उसके पीछे बेचारी गृहिणी कैसे दौड़ पाती। ऐसे चिर सृजनशील कलाकार चिर कुमार देवऋषि नारद की कोटि के होते हैं, जिनकी गृहस्थी बसने के क्षण में भगवान तक बाधक बन बैठे थे।

आधुनिक युग साहित्यकार की चरम शक्ति परीक्षा का काल रहा है। संघर्ष की इस झंझा ने विशाल जहाजों को तट पर ही पछाड़ कर तोड़ डाला; ऊँचे-ऊँचे शाल वृक्षों को झकझोर कर धरासात् कर दिया। हममें से जो सबसे कोमल सुकुमार साथी था उसके लिए सबकी चिन्ता स्वाभाविक ही कही जाएगी। पर आँधी के थमने पर हमने देखा कि लचीले बेंत के समान झुक कर उन्होंने तूफान को अपने ऊपर से बह जाने दिया है और अब वे नए प्रभात के अभिनन्दन के लिए उन्मुख खड़े हैं।

सुमित्रानंदन जी की हँसी पर श्रम बिन्दुओं का बादल नहीं धिरा हुआ है; वरन् श्रम-बिंदुओं के बादल के दोनों छोरों को जोड़ता हुआ उनकी हँसी का इन्द्रधनुष उदय हुआ है।

(रूपोत : संस्मरण, महादेवी वर्मा)

पाठ्य पुस्तक-सूची, अगस्त 2023 SYLLABUS FOR AUGUST 2023

प्राथमिक	PRATHMIC
प्राथमिक पाठ्य पुस्तक (प्रश्नोत्तर सहित)	Prathamic Patya Pusthak (with Question & Answer)
मध्यमा	MADHYAMA
मध्यमा पाठ्य पुस्तक (प्रश्नोत्तर सहित)	Madhyama Patya Pusthak (with Question & Answer)
राष्ट्रभाषा	RASHTRABHASHA
राष्ट्रभाषा पाठ्य पुस्तक (प्रश्नोत्तर सहित)	Rashtrabhasha Patya Pusthak (with Question & Answer)
प्रवेशिका	PRAVESHika
पुराना पाठ्यक्रम (प्रथम पत्र) नवीन पद्य चयनिका -1 नवीन गद्य चयनिका -1 (द्वितीय पत्र) सत्य का स्वर सत्यमेव जयते (संवर्धित) हिंदी व्याकरण प्रवेशिका-1 (तृतीय पत्र) भाग – I हिंदी रत्नाकर भाग – II (प्रादेशिक भाषा - तेलुगु) गद्य मंदारम काव्य मंजरी (तेलुगु) (प्रकाशक : द. भा.हि.प्र. सभा (आंध्र), खैरताबाद, हैदराबाद - 4) (प्रादेशिक भाषा - कन्नड़) कन्नड गद्य भारती भाग-1 कन्नड पद्य भारती भाग-1 (प्रकाशक : द. भा.हि.प्र. सभा (कर्नाटक), डी.सी. काम्पौण्ड, धारवाड-580 001) (प्रादेशिक भाषा - मलयालम) गद्य तरंगावली पद्य तरंगावली (प्रकाशक : द. भा.हि.प्र. सभा (केरल), चित्तूर रोड़, एरणाकुलम, कोच्चिन -16)	Old Syllabus (First Paper) Naveen Padya Chayanika - 1 Naveen Gadya Chayanika - 1 (Second Paper) Sathy Ka Swar Sathyameva Jaythe (Revised) Hindi Vyakaran Praveshika- 1 (Third Paper) PART - I Hindi Ratnakar PART -II (Regional Language – Telugu) Gadya Mandaaram Kavya Manjari (Telugu) (Pub.: D.B.H.P.Sabha (Andhra) Khairatabad, Hyderabad-4) (Regional Language – Kannada) Kannada Gadya Bharati Part-1 Kannada Padya Bharati Part-1 (Pub.: D.B.H.P. Sabha (Karnataka), D.C. Compound, Dharwad-580 001) (Regional Language – Malayalam) Gadya Tharangavali Padya Tharangavali (Pub.:D.B.H.P. Sabha (Kerala), Chittoor Road, Ernakulam, Cochin-16)

(प्रादेशिक भाषा - तमिल)
तमिल पोषिल-1 (पद्य संग्रह)
तमिल पोषिल-2 (गद्य संग्रह)
(प्रकाशक : द.भा.हिं.प्र. सभा (तमिलनाडु),
तेन्नूर हाई रोड, तिरुच्चि-17)
(प्रादेशिक भाषा - मराठी)
श्रेयसी (प्रकाशक : नव साहित्य प्रकाशन, बेलगाँव)
उपेक्षिता चे अंतरंग (प्रकाशक : ज.अ. कुलकर्णी,
कॉटिनेटल प्रकाशन, विजयनगर, पुणे-30)

(Regional Language – Tamil)
Tamil Pozhil-1 (Padya Sangrah)
Tamil Pozhil-2 (Gadya Sangrah)
**(Pub.: D.B.H.P. Sabha (Tamil Nadu),
Tennur High Road, Trichy-17)**
(Regional Language – Marathi)
Shreyasi (Pub.: Nava Sahitya Pub., Belgaum)
Upekshitha che Antharangha (Pub.: J.A. Kulkarni,
Continental Publication, Vijayanagar, Pune-30)

नया पाठ्यक्रम (प्रवेशिका)

प्रवेशिका पाठ्य पुस्तक-1
(प्रथम पत्र)
प्रवेशिका पाठ्य पुस्तक-2
(द्वितीय पत्र)
प्रवेशिका पाठ्य पुस्तक-3
(तृतीय पत्र)

New Syllabus (PRAVESHIIKA)

Praveshika Patya Pustak-1
(First Paper)
Praveshika Patya Pustak-2
(Second Paper)
Praveshika Patya Pustak-3
(Third Paper)

(प्रादेशिक भाषा के लिए मद्रास के प्रचारक केंद्र सभा को संपर्क करें। शेष प्रचारक अपने-अपने प्रांतीय सभा से संपर्क करें।)

पुराने पाठ्यक्रम की किताबें सिर्फ 2023 अगस्त की परीक्षा के लिए मात्र लागू होगा। फरवरी 2024 से प्रवेशिका का नया पाठ्यक्रम मात्र लागू होगा।

राष्ट्रभाषा विशारद पूर्वार्द्ध

(प्रथम पत्र)
नवीन गद्य चयनिका - 2
निर्मला
नवीन कहानी कलश
(द्वितीय पत्र)
नवीन हिन्दी व्याकरण
व्यावहारिक हिन्दी (पत्र-लेखन)
(हिन्दी संक्षिप्त लेखन)
हिन्दी निबंध संकलन
अनुवाद अभ्यास-5
(तृतीय पत्र)
(प्रादेशिक भाषा - तेलुगु)
गद्य चंद्रिका
काव्य कुसुमावली
(प्रकाशक : द.भा.हिं.प्र. सभा, आंध्र)
(प्रादेशिक भाषा - कन्नड़)
आधुनिक कन्नड गद्य भारती-2

R.B. VISHARAD POORVARDH

(First Paper)
Naveen Gadya Chayanika-2
Nirmala
Naveen Kahani Kalash
(Second Paper)
Naveen Hindi Vyakaran
Vyavaharik Hindi (Letter Drafting)
(Hindi Sankshipta Lekhan)
Hindi Nibandh Sankalan
Anuvad Abhyas-5
(Third Paper)
(Regional Language – Telugu)
Gadya Chandrika
Kavya Kusumavali
(Pub.: D.B.H.P. Sabha, Andhra)
(Regional Language – Kannada)
Adhunik Kannada Gadya Bharati-2

परिसर मानव इतर कवितेगलु
 (प्रकाशक : द.भा.हि.प्र. सभा, कर्नाटक)
 (प्रादेशिक भाषा - मलयालम)
 पतिनोन्नु कथैकळ
 पद्य रत्नम (प्रकाशक : द.भा.हि.प्र. सभा, केरल)
 (प्रादेशिक भाषा - तमिल)
 इलकिक्य कनिगळ
 मलर्चंडु (प्रकाशक : द.भा.हि.प्र. सभा, तमिलनाडु)
 (प्रादेशिक भाषा - मराठी)
 चांदणवेल (संपादक : गो.प. कुलकर्णी)
 गोतावळा (लेखक : आनंद यादव)

Parisara Manava Ithara Kavithegal
 (Pub. : D.B.H.P. Sabha, Karnataka)
(Regional Language – Malayalam)
 Pathinonnu Kathaikal
 Padya Ratnam (Pub.: D.B.H.P. Sabha, Kerala)
(Regional Language – Tamil)
 Ilakkya Kanigal
 Malar Chendu (Pub. : D.B.H.P. Sabha, T.N.)
(Regional Language – Marathi)
 Chaandhanavel (Editor: G.P. Kulkarni)
 Gothavala (Author: Anand Yadav)

राष्ट्रभाषा विशारद उत्तरार्द्ध

(प्रथम पत्र)
 नवीन पद्य चयनिका - 2
 पंचवटी
 (द्वितीय पत्र)
 ध्रुवस्वामिणी
 प्राचीन भारत का इतिहास
 सूर्योदय (प्रकाशन-द.भा.हि.प्र. सभा)
 (तृतीय पत्र - मौखिक)
 मौखिकी - प्रश्नोत्तरी सहित लिखावट के नमूने

R.B. VISHARAD UTTHARARDH

(First Paper)
 Naveen Padya Chayanika-2
 Panchavati
(Second Paper)
 Dhruva Swamini
 Praacheen Bharat ka Itihas
 Sooryodaya (Sabha Pub.)
(Third Paper – Viva-voce)
 Viva-voce with Likhavat ke Namune

राष्ट्रभाषा प्रवीण पूर्वार्द्ध

(प्रथम पत्र)
 नवीन गद्य चयनिका - 3
 स्कन्दगुप्त (नाटक)
 निबंध सौरभ
 गबन (प्रेमचंद)
 (द्वितीय पत्र)
 हिन्दी साहित्य का संक्षिप्त इतिहास
 दक्षिण में हिन्दी प्रचार आंदोलन का इतिहास
 दक्षिणी कथाएँ (परिवर्द्धित)
 (तृतीय पत्र)
 (प्रादेशिक भाषा - तेलुगु)
 व्यास मंजूषा
 काव्य माला (प्रकाशक : द.भा.हि.प्र. सभा, आंध्र)
 (प्रादेशिक भाषा - कन्नड)
 कन्नड कथा भारती
 कन्नड पद्य भारती, भाग-3
 (प्रकाशक : द.भा.हि.प्र. सभा, कर्नाटक)

R.B. PRAVEEN POORVARDH

(First Paper)
 Naveen Gadya Chayanika-3
 Skandagupta (Natak)
 Nibandh Sowrabh
 Gaban (Premchand)
(Second Paper)
 Hindi Sahitya ka Sankshipt Itihas
 Dakshin me Hindi Prachar Andolan ka Itihas
 Dakshini Kathayen (Revised)
(Third Paper)
(Regional Language – Telugu)
 Vyaas Manjusha
 Kavya Mala (Pub.: D.B.H.P. Sabha, Andhra)
(Regional Language – Kannada)
 Kannada Katha Bharathi
 Kannada Padya Bharati, Part-3
 (Pub. : D.B.H.P. Sabha, Karnataka)

(प्रादेशिक भाषा - मलयालम)

चिन्ता विष्टयाय सीता

मलयाल माधुर्यम (उपलब्ध : द.भा.हि.प्र. सभा, केरल) Malayala Madhuryam (Available: D.B.H.P.Sabha,Kerala)

(प्रादेशिक भाषा - तमिल)

कंबरामायणम – वालिवधैप्पडलम

कवितैप्पैङ्गा

(पुरनानूरु और कंब रामायण को छोड़कर)

तमिल इलकिक्य वरलारु

(प्रका.: द.भा.हि.प्र. सभा, तमिलनाडु)

(प्रादेशिक भाषा - मराठी)

गावगुंड (प्रकाशक : लेखक – ग.ल. टोकल

श्री लेखन वाचन भण्डार 1004, बुधवारपेट, पुणे-2)

अभ्र (संपादक : कृ.व. निकुम्ब)

(Regional Language – Malayalam)

Chintha Vistayaya Seetha

Malayala Madhuryam (Available: D.B.H.P.Sabha,Kerala)

(Regional Language – Tamil)

Kamba Ramayanam - Valivadhaipadalam

Kavithai poonga

(Except Puranaanooru and Kamba Ramayan)

Tamil Ilakkia Varalaaru

(Pub.: D.B.H.P.Sabha,Tamil Nadu)

(Regional Language – Marathi)

Gaavagund (Pub.: Author - G.L. Tokal

Sri Lekan Vaachan Bandar 1004, Budhvarpet, Pune-2)

Abhra (Editor: K.V. Nikumba)

राष्ट्रभाषा प्रवीण उत्तरार्द्ध

R.B. PRAVEEN UTTARARDH

(प्रथम पत्र)

रश्मिरथी

नवीन पद्य चयनिका-3

प्राचीन पद्य चयनिका

(द्वितीय पत्र)

काव्य के रूप

काव्य शास्त्र (रस, छंद अलंकार)

1. नौ रसों का सामान्य परिचय।

2. शब्दालंकार : अनुप्रास, यमक, श्लेष, वक्रोक्ति।

3. अर्थालंकार : उपमा, प्रदीप, रूपक, उत्त्रेक्षा, अपह्नुति, भ्रम, संदेह, दृष्टान्त, उदाहरण, उल्लेख, निर्दर्शन, अतिशयोक्ति, अर्थान्तरन्यास, अप्रस्तुत प्रशंसा, समासोक्ति, व्याजस्तुति, विरोधाभास।

4. छन्द : चौपाई, रोला, गीतिका, हरिगीतिका, बरवै, दोहा, सोरठा, उल्लास, कुंडलियाँ, कवित, सैवैया, छप्पय, दृतविलंबित, वंशस्य, मालिनी, मंद्राक्रान्ता।

भाषा विज्ञान प्रवेश

Basha Vignan Pravesh

(तृतीय पत्र)

त्रिपथगा (निबंध संग्रह)

प्रयोजनमूलक हिंदी (सभा प्रकाशन)

अनुवाद अभ्यास - 6

(मौखिक)

लिखावट के नमूने

(Third Paper)

Thripathaga (Essays)

Prayojan moolak Hindi (Sabha Pub.)

Anuvad Abhyas-6

(Viva-voce)

Likhavat ke Namune

आसान परीक्षा पाठ्यक्रम

EASY LANGUAGE SYLLABUS

(प्रवेशिका)

तेलुगु : तेलुगु भाषा बोधिनी – I

कन्नड़ : कन्नड़ भाषा बोधिनी – I

(PRAVESHika)

Telugu : Telugu Bhasha Bodhini-I

Kannada : Kannada Bhasha Bodhini-I

तमिल : तमिल भाषा बोधिनी – I
मलयालम : मलयालम भाषा बोधिनी – I
मराठी : मराठी भाषा बोधिनी – I

(रा.भा. विशारद पूर्वार्द्ध)
तेलुगु : तेलुगु भाषा बोधिनी – II
कन्नड़ : कन्नड़ भाषा बोधिनी – II
तमिल : तमिल भाषा बोधिनी – II
मलयालम : मलयालम भाषा बोधिनी – II
मराठी : मराठी भाषा बोधिनी – II

(रा.भा. प्रवीण पूर्वार्द्ध)
तेलुगु : तेलुगु भाषा बोधिनी – III
कन्नड़ : कन्नड़ भाषा बोधिनी – III
तमिल : तमिल भाषा बोधिनी – III
मलयालम : मलयालम भाषा बोधिनी – III
मराठी : मराठी भाषा बोधिनी – III

Tamil : Tamil Bhasha Bodhini-I
Malayalam : Malayalam Bhasha Bodhini-I
Marathi : Marathi Bhasha Bodhini-I

(R.B. VISHARAD POORVARDH)
Telugu : Telugu Bhasha Bodhini-II
Kannada : Kannada Bhasha Bodhini-II
Tamil : Tamil Bhasha Bodhini-II
Malayalam : Malayalam Bhasha Bodhini-II
Marathi : Marathi Bhasha Bodhini-II

(R.B. PRAVEEN POORVARDH)
Telugu : Telugu Bhasha Bodhini-III
Kannada : Kannada Bhasha Bodhini-III
Tamil : Tamil Bhasha Bodhini-III
Malayalam : Malayalam Bhasha Bodhini-III
Marathi : Marathi Bhasha Bodhini-III

प्रकाशक : दक्षिण भारत हिंदी प्रचार सभा, मद्रास

'YouTube' Channel

प्रचारक बंधुओं के लिए शुभ समाचार

DBHPS, Central Sabha Chennai के नाम से सभा ने अपना 'YouTube' चैनल शुरू किया है। इसमें सभा संबंधी समाचार, परीक्षा समाचार, समारोह, पाठ्य पुस्तक संबंधी संक्षिप्त विवरण होंगे। आप सबसे विनम्र अनुरोध है कि इस चैनल को 'Like' और 'Subscribe' करें।

श्रद्धांजलि

अत्यंत दुख का विषय है कि वरिष्ठ हिंदी प्रचारक, केंद्र सभा एवं तमिलनाडु प्रांत के व्यवस्थापिका समिति के सदस्य श्री सी. राजमोहन (तिरुच्चि) का निधन 20 मार्च, 2023 को हुआ। परमपिता परमात्मा से प्रार्थना करते हैं कि दिवंगत आत्मा को चिरशांति और शोक संतप्त परिवार को सहन शक्ति प्रदान करें।





परीक्षा शुल्क विवरण - अगस्त 2023

परीक्षा का नाम Name of the Exam	परीक्षा शुल्क - चालू प्र.प्र के लिए Exam Fees for Chaalu Pramanith Pracharak Only ₹	परीक्षा शुल्क - प्राइवेट परीक्षार्थी के लिए Exam Fees for Private Candidate ₹
प्राथमिक/Prathamic	220	270
मध्यमा /Madhyama	280	350
राष्ट्रभाषा/Rashtrabhasha	360	450
प्रवेशिका/Praveshika	540	640
विशारद पूर्वार्द्ध/Visharad Poorvardh	550	670
विशारद उत्तरार्द्ध/Visharad Uttarardh	550	670
प्रवीण पूर्वार्द्ध/Praveen Poorvardh	580	720
प्रवीण उत्तरार्द्ध/Praveen Uttarardh	580	720

अगस्त - 2023 (दूसरा सत्र) के लिए आवेदन पत्र के साथ परीक्षा शुल्क

जमा करने की अंतिम तारिख : **15/06/2023**

विलंब शुल्क ₹.10/- के साथ : **25/06/2023**

परीक्षा सचिव

जिन परीक्षार्थियों का परीक्षा-फल रोका गया (**Withheld**) है, उनके प्रवेश-पत्र पर इससे संबंधित सूचना दी गई है। उनको परीक्षा-फल के प्रकाशन की तारीख से 45 दिनों के अंदर अपनी पूर्व परीक्षा में उत्तीर्णता विवरण या अपेक्षित विवरण देकर अपना रोका गया परीक्षा परिणाम प्राप्त करना होगा। अन्यथा उस पर कोई कार्रवाई नहीं की जाएगी।

- **परीक्षा सचिव**

प्रचारक तथा परीक्षार्थियों की सुविधा के लिए...

परीक्षा/प्रमाण पत्र संबंधी जानकारी तथा अन्य सभी आवश्यक विवरण प्राप्त करने के लिए केंद्र सभा के परीक्षा विभाग का WhatsApp No. 8124333004 उपलब्ध है।

- **परीक्षा सचिव**

दक्षिण भारत हिन्दी प्रचार सभा, मद्रास,
परीक्षा विभाग, मद्रास शहर के प्रचारकगण कृपया ध्यान दें।
जुलाई 2023 की परिचय परीक्षा संबंधी सूचना (मद्रास शहर के लिए मात्र)

जुलाई 2023 परिचय परीक्षा का दूसरा सत्र ऑफलाइन में होगा। परिचय परीक्षा के आवेदन पत्र सभा के वित्त विभाग के रसीद के साथ या परिचय परीक्षा शुल्क ऑनलाइन में जमा करके, जमा विवरण (रसीद) आवेदन पत्र के साथ परीक्षा विभाग में सुपुर्द कर सकते हैं।

- | | |
|--|--------------|
| > परीक्षा शुल्क | - रु. 210 |
| > चालू प्रमाणित प्रचारक अनुदान | - रु. 30/- |
| > परीक्षा शुल्क भरने की अंतिम तारीख | - 15.05.2023 |
| > विलंब शुल्क सहित परीक्षा शुल्क भरने की अंतिम तारीख - | 25.05.2023 |
- जुलाई 2023 सत्र के लिए नया और पुराना पाठ्यक्रम से प्रश्न पूछे जाएँगे। दोनों पाठ्यक्रमों के लिए अलग-अलग प्रश्न-पत्र दिए जाएँगे।
- परीक्षा सचिव

दक्षिण भारत हिन्दी प्रचार सभा, मद्रास
प्रवेशिका के लिए नया पाठ्यक्रम

प्रचारक बंधुओं को सादर प्रणाम। आपको यह सूचित करते हुए हर्ष का अनुभव कर रहे हैं कि सभा की प्रवेशिका के पाठ्यक्रम के लिए संशोधित एवं परिवर्द्धित पुस्तकें मुद्रित होकर तैयार हो चुकी हैं। पुस्तकों का विवरण इस प्रकार है :-

प्रवेशिका पाठ्य पुस्तक 1, 2, 3 (व्याख्यानमाला सहित)

इन पुस्तकों को प्रचारक एवं विद्यार्थियों की सुविधाओं को ध्यान में रखते हुए तैयार किया गया है। प्रचारकों से विनम्र निवेदन है कि वे विद्यार्थियों को पाठ्य पुस्तक पढ़ने के लिए प्रोत्साहित करें।

यह भी सूचित करना चाहते हैं कि पुराना पाठ्यक्रम अगस्त 2023 की परीक्षा तक व्यवहार में रहेगा।

इन नए पाठ्य पुस्तकों के अंत में परीक्षा आवेदन पत्र भी होगा। परीक्षा के लिए इसी आवेदन पत्र का प्रयोग करना अनिवार्य है।

- प्रधान सचिव

Printed by G. Selvarajan General Secretary and published by G. Selvarajan on behalf of Dakshina Bharat Hindi Prachar Sabha (name of owner) G. Selvarajan and printed at Hindi Prachar Press (place of printing) 15-21C Thanikachalam Road, T.Nagar, Chennai-600 017 and published at Dakshina Bharat Hindi Prachar Sabha (place of publication) 15-21C Thanikachalam Road, T.Nagar, Chennai-600 017. Editor G. Selvarajan.

दक्षिण भारत हिन्दी प्रचार सभा, मद्रास
शिक्षा परिषद की बैठक : 16 अप्रैल, 2023 : चित्र दीर्घा



तेलंगाना राज्य की नई मुख्य सचिव ए. शांति कुमारी का अभिनंदन करते हुए¹
आंध्र शाखा के प्रबंध निधिपालक, कोषाध्यक्ष, सचिव व प्रबंधकगण



REGISTERED NEWSPAPER

May, 2023. Regd. No. TN/CH(C)/321/2021-2023

Licenced to Post without Pre-payment No.TN/PMG(CCR)WPP-432/2021-2023
Posted at Egmore RMS-1; Registrar of Newspaper for India under No. 1089/1957

Date of Publication – First week of every month

Posted at Patrika Channel on Dt. 11th May, 2023

Hindi Prachar Samachar

To

If not delivered, please return to:

Dakshina Bharat Hindi Prachar Sabha,
15-21, Thaniyakachalam Road, T. Nagar, P.O., Chennai - 600 017.

दक्षिण भारत हिन्दी प्रचार सभा, चेन्नै - 600 017 की तरफ से जी. सेल्वराजन द्वारा प्रकाशित एवं मुद्रित 15-21, तमिकाचलम रोड, टी.नगर, चेन्नै - 600 017 में प्रकाशित एवं मुद्रित। संपादक : जी. सेल्वराजन Published and Printed by G. Selvarajan on behalf of D.B. Hindi Prachar Sabha, Chennai-600 017. Published and Printed at 15-21, Thaniyakachalam Road, T. Nagar, Chennai - 600 017. Editor G.Selvarajan.

Page No. 44

